Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 179 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 04 जनवरी 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

आज लोकतंत्र को सम्हालने वालों का तैयार करने वालों की आवश्यकता है जो इस भारत के लोकतंत्र को सही दिशा प्रदान कर सकें।

Today we need such people who can prepare defenders of democracy who in turn can give right derection to Indian democracy.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

प्रदेश के 95 नगर पंचायतों में प्रशासकों की नियुक्ति की अधिसूचना राजपत्र में प्रकाशित

रायपुर (विसं)। राज्य सरकार ने नगर निगमों, नगर पालिकाओं के बाद प्रदेश के 95 नगर पंचायतों में प्रशासकों की नियुक्ति की अधिसूचना राजपत्र में प्रकाशित कर दी है। तहसीलदार को प्रशासक बनाए गए हैं। ये प्रशासक नगर पंचायतों का निर्वाचन कार्यकाल खत्म होते ही अपनी जिम्मेदारी संभालेंगे।

विधायक देवेन्द्र यादव की जमानत याचिका खारीज

रायपुर (विसं)। बलौदाबाजार हिंसा मामले में गिरफ्तार भिलाई के विधायक देवेंद्र यादव की जमानत याचिका को छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया है। जस्टिस एन.के. व्यास की सिंगल बेंच ने यह फैसला सुनाया है। बता दें कि विधायक देवेंद्र यादव को बलौदाबाजार में भीड़ को हिंसा के लिए उकसाने के आरोप में 17 अगस्त 2024 को गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद से उनकी न्यायिक रिमांड लगातार बढ़ाई गई और वे वर्तमान में रायपुर सेंट्रल जेल में बंद हैं। इस पूर्व 12 दिसंबर को हुइ सुनवाई में जस्टिस एन.के. व्यास की सिंगल बेंच ने इस पर अपना फैसला सुरक्षित रखा था। और आज 3 जनवरी को हुई सुनवाई में कोट ने विधायक देवेन्द्र यादव की जमानत याचिका को खारीज कर दिया है।

मुख्यमंत्री ने राजिम कुंभ कल्प की तैयारियों के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक कर दिए जरूरी निर्देश

छत्तीसगढ़ की समृद्ध परंपराओं और संस्कृति को प्रदर्शित करने का माध्यम बनेगा राजिम कुंभ कल्प : विष्णुदेव साय

राजिम कुंभ कल्प 2025 : अध्यात्म और संस्कृति का भव्य आयोजन

12 से 26 फरवरी तक आयोजित होगा राजिम कुंभ कल्प

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के प्रयाग के रूप में प्रसिद्ध राजिम में 12 फरवरी से 26 फरवरी 2025 तक कुंभ कल्प का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस वर्ष यह अद्भुत धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन 52 एकड़ के नए प्रस्तावित मेला स्थल में संपन्न होगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने मंत्रालय महानदी भवन स्थित बैठक कक्ष में आज राजिम कुंभ कल्प के तैयारियों के संबंध में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक कर आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने शाही स्नान, गंगा आरती, संत समागम समेत कुंभ कल्प के प्रमुख आयोजनों और श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने को कहा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राजिम कुंभ कल्प 2025 धर्म, आस्था और संस्कृति का अद्भुत समागम होगा और यह छत्तीसगढ़ की समृद्ध परंपराओं और संस्कृति को प्रदर्शित करने का भी सुंदर माध्यम है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि श्रद्धालुओं को यहां अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त हो और यह आयोजन हमारी गौरवशाली विरासत को देश-दुनिया तक पहुंचाएं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने राजिम कुंभ कल्प के आयोजन में शामिल समस्त विभागों और प्रशासनिक अमले को आपस में समन्वय स्थापित कर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने श्रद्धालुओं के आवागमन की व्यवस्था, सुरक्षा संबंधी उपाय और स्वच्छता के लिए विशेष ध्यान देने को कहा। श्री साय ने कहा कि हम सबकी जिम्मेदारी है कि इस आयोजन को सफल बनाएं और छत्तीसगढ़ की पहचान के रूप में इसे स्थापित करें। उन्होंने 12 फरवरी को आयोजित माघी पुन्नी स्नान, 21 फरवरी जानकी जयंती के अवसर पर संत समागम और 26 फरवरी को होने वाले शाही स्नान की तैयारी पर विशेष ध्यान देने को कहा। मुख्यमंत्री श्री साय को अपर मुख्य सचिव श्री सुब्रत साहू ने राजिम कुंभ कल्प 2025 के आयोजन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने पीपीटी के माध्यम से आयोजन स्थल में विभिन्न गतिविधियों के लिए निर्धारित स्थानों के बारे में बताया। कुंभ कल्प में नागरिक सुविधाओं, साधु संतों के आवागमन, शाही स्नान और गंगा आरती को लेकर विभाग के तैयारियों के बारे में जानकारी दी।

उल्लेखनीय है कि 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा के पावन अवसर पर राजिम कुंभ कल्प का शुभारंभ होगा और 26 फरवरी महाशिवरात्रि को इसका समापन होगा। राजिम कुंभ कल्प पैरी, महानदी और सोंढूर नदी के संगम पर आयोजित होगा। श्रद्धालु इन पवित्र नदियों में स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करेंगे।

राजिम कुंभ कल्प के संपूर्ण आयोजन के लिए पर्यटन विभाग को नोडल बनाया गया है। 15 दिनों तक चलने वाले इस कुंभ कल्प में पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी साधु संतों का विराट समागम होगा। माघी पुन्नी स्नान, शाही स्नान, जानकी जयंती के अवसर पर संत समागम विशेष रूप से आयोजित होगा। प्रतिदिन सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन, मेला, मड़ई, मीना बाजार और विभागीय प्रदर्शनी भी कुंभ कल्प का विशेष आकर्षण के रूप में शामिल हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्लीवासियों को 4500 करोड़ रुपए की विभिन्न योजनाओं की सौगात दी

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्लीवासियों को 4500 करोड़ की विभिन्न योजनाओं की सौगात दी। प्रधानमंत्री मोदी ने शुक्रवार को दिल्ली के अशोक विहार स्थित स्वाभिमान अपार्टमेंट में नवनिर्मित फ्लैटों की चाबियां लाभार्थियों को सौंपी और कहा कि देशवासियों को छत मिले ये उनका सपना है। पीएम मोदी ने वर्चुअली दो शहरी पुनर्विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जिसमें नौरोजी नगर का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और सरोजिनी नगर में जीपीआरए टाइप-II क्वार्टर, द्वारका में सीबीएसई का एकीकृत कार्यालय परिसर शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी ने नजफगढ़ के रोशनपुरा में वीर सावरकर कॉलेज की आधारशिला भी वर्चुअली रखी।

पीएम मोदी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, यह वर्ष विश्व में भारत में अंतरराष्ट्रीय छवि को और सशक्त करने का होगा। यह वर्ष भारत को दुनिया का बड़ा मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने का वर्ष होगा। यह वर्ष युवाओं को नए स्टार्टअप और एंटरप्रेन्योरशिप में आगे बढ़ाने का होगा। यह वर्ष कृषि क्षेत्र में नए कीर्तिमानों का होगा। यह वर्ष महिला नेतृत्व विकास के हमारे मंत्र को नई ऊंचाई देने का होगा। यह वर्ष जीवन जीने में आसानी और जीवन स्तर बढ़ाने का होगा। उन्होंने आगे कहा, साल 2025 भारत के विकास के लिए अनेक नई संभावनाएं लेकर आ रहा है। दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बनने की ओर हमारी यात्रा इस वर्ष और तेज होने वाली है। आज भारत, दुनिया में राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता का प्रतीक बना है, 2025 में भारत की ये भूमिका और सशक्त होगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने बिना नाम लिए अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, देश भलीभांति जानता है कि मोदी ने कभी अपने लिए घर नहीं बनाया, लेकिन बीते 10 वर्षों में 4 करोड़ से अधिक लोगों का सपना पूरा किया है। मैं भी कोई शीश महल बना सकता था, लेकिन मेरे लिए तो मेरे देशवासियों को पक्का घर मिले, यही सपना था। पीएम मोदी ने आपातकाल का जिक्र करते हुए कहा, जब देश उथल-पुथल भरे दौर से गुजर रहा था, इंदिरा गांधी की तानाशाही सरकार और आपातकाल के खिलाफ संघर्ष कर रहा था, तब मैं और मेरे कई साथी भूमिगत आंदोलन का हिस्सा थे। उस दौरान अशोक विहार मेरा निवास स्थान था और आज भी अशोक विहार जाने पर पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। उन्होंने कहा, आज पूरा देश एकजुट होकर विकसित भारत के निर्माण के लिए काम कर रहा है। हमारा संकल्प है कि हर नागरिक के पास पक्का मकान हो और हम इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। इस लक्ष्य को हासिल करने में दिल्ली की अहम भूमिका है, यही वजह है कि भाजपा की केंद्र सरकार ने झुग्गियों की जगह पक्के मकान बनाने की पहल शुरू की है। 'स्वाभिमान अपार्टमेंट्स,' गरीबों के स्वाभिमान को, उनकी गरिमा को बढ़ाने वाले हैं। इन घरों के मालिक भले ही दिल्ली के अलग-अलग जगहों के लोग हों, लेकिन ये सब के सब मेरे परिवार के ही सदस्य हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों को बधाई देते हुए कहा, मैं विशेष रूप से उन साथियों, माताओं, बहनों को बधाई देता हूं, जिनकी एक तरह से नई जिंदगी शुरू हो रही है। झुग्गी की जगह पक्का घर, अपना घर, ये नई शुरुआत ही तो है। जिनको ये घर मिले हैं, ये उनके स्वाभिमान का घर है, ये आत्मसम्मान का घर है, ये नई आशाओं और नए सपनों का घर है। मैं आप सभी की खुशियों में आपके उत्सव का हिस्सा बनने यहां आया हूं।

अवैध मदिरा के विनिर्माण, परिवहन एवं विक्रय पर प्रभावी नियंत्रण के लिए करें कड़ी कार्रवाई: मुख्यमंत्री साय

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने प्रदेश में अवैध मदिरा के विनिर्माण, धारण, परिवहन एवं विक्रय पर प्रभावी नियंत्रण के लिए पुलिस विभाग के समन्वय से कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश आबकारी विभाग के अधिकारियों को दिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के सीमावर्ती जिलों में स्थापित आबकारी चेक पोस्ट को क्रियाशील रखें। राज्य में स्थित आसवनियों, बॉटलिंग इकाईयों, होटल, बार, क्लब की नियमित सघन जांच सुनिश्चित की जाए। मुख्यमंत्री श्री साय ने आज मंत्रालय महानदी भवन में आबकारी विभाग के कार्यों की समीक्षा बैठक के दौरान यह निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य में देशी मदिरा की नवीन बॉटलिंग इकाई हेतु प्राप्त आवेदनों पर नियमानुसार त्वरित कार्यवाही की जाए तथा छत्तीसगढ़ के बाहर निर्मित मदिरा की विनिर्माण इकाईयों को छत्तीसगढ़ में स्वयं के विनिर्माण संयंत्र लगाये जाने के लिये प्रोत्साहित किया जाए। इसके लिए उन्हें कार्य अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके।

राज्य सरकार पर्यटन और ऐतिहासिक महत्व के स्थलों को चिन्हांकित कर पर्यटन स्थल के रूप में कर रहे हैं विकसित

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार पर्यटन और ऐतिहासिक, धार्मिक व पौराणिक महत्व के स्थलों को चिन्हांकित कर धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर रहा है। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के अंतर्गत पर्यटन और रोमांच से भरपूर सरायपाली स्थित शिशुपाल पर्वत नए पर्यटन डेस्टिनेशन के रूप में उभर कर सामने आया है। इस पर्वत का ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक महत्व भी है। मकर संक्रांति और महाशिवरात्रि के अवसर पर यहां विशाल मेला का आयोजन भी होता है।

महासमुंद जिले के सरायपाली स्थित शिशुपाल पर्वत ट्रैकिंग और एडवेंचर के शौकीन युवाओं के लिए एक शानदार डेस्टिनेशन है। यह स्थान अपनी अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्त्व के लिए जाना जाता है। राजधानी रायपुर से 157 किमी और सरायपाली से लगभग 20 किमी की दूरी पर स्थित यह पर्वत पर्यटकों को प्रकृति के करीब लाने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। शिशुपाल पर्वत (बूढ़ा डोंगर) समुद्र तल से 900 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए रोमांचक ट्रैकिंग मार्ग है, जो रोमांचक ट्रैकिंग का नया अनुभव कराता है। यह पर्यटन स्थल साहसिक गतिविधियों के प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। ट्रैकिंग मार्ग घने जंगलों, चट्टानों और प्राकृतिक पगडंडियों से होकर गुजरता है। पहाड़ के ऊपर एक विशाल मैदान है, जहां से वर्षा ऋतु के दौरान पानी 1100 फीट नीचे गिरकर घोड़ाधार जलप्रपात का निर्माण करता है। यह झरना और उसके चारों ओर हरियाली एक अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत करता है।

-पोषण साहू, सहायक संचालक
ओ.पी. डहरिया, सहायक जनसंपर्क अधिकारी

एसपी ने किया 26 पुलिस कर्मियों का तबादला

बिलासपुर-रायपुर (विसं)। बिलासपुर एसपी रजनेश सिंह ने जिले में प्रशासनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक एएसआई, पांच प्रधान आरक्षकों सहित कुल 26 पुलिसकर्मियों का तबादला आदेश जारी किया है। जारी तबादला आदेश के मुताबिक एएसआई अशोक मिश्रा को पुलिस सहायता केंद्र केंदा से पुलिस लाइन स्थानांतरित किया गया है. प्रधान आरक्षक पंकज राय को पुलिस लाइन से कोटा, लक्ष्मण सिंह को पचपेड़ी से पुलिस लाइन और कान्हा अंचल को पुलिस लाइन से पचपेड़ी भेजा गया है. इसके अलावा, प्रवीण पाण्डेय का हिर्री से जूनापारा चौकी और रगेश चंद्र पटनायक का पुलिस नियंत्रण कक्ष से कोनी थाने में तबादला किया गया है. आरक्षक गोविंद शर्मा को पुलिस लाइन से तारबाहर भेजा गया है।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने सक्ती जिले में ली समीक्षा बैठक

शासन की जनहितकारी योजनाओं का जमीनी स्तर पर बेहतर क्रियान्वयन के दिए निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने आज सक्ती जिले के कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में सभी विभागों के अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने जिले में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनहितकारी योजनाओं का जमीनी स्तर पर बेहतर क्रियान्वयन करते हुए आमजन को ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित कराने के निर्देश दिए। मंत्री ने विभागीय अधिकारियों-कर्मचारियों को विभिन्न ग्राम पंचायतों में जाकर स्व-सहायता समूह को स्वच्छ भारत मिशन सहित अन्य कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए है।

समीक्षा बैठक में सांसद लोकसभा क्षेत्र जांजगीर-चांपा श्रीमती कमलेश जांगड़े, पूर्व विधायक डॉक्टर खिलावन साहू, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती विद्या सिदार, जिला पंचायत सदस्य श्री टिकेश्वर गबेल, कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री अमृत विकास तोपनो, पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा सहित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने समीक्षा बैठक में सक्ती जिले में अब तक किये गए पौधरोपण के कार्यों की जानकारी लेते हुए रोपित किये गए पौधों की देख रेख करने के निर्देश दिए। मंत्री ने समीक्षा बैठक में जिले के विभिन्न ग्रामों में मनरेगा अंतर्गत कौन-कौन से कार्य चल रहे है तथा कितने लोगों को मनरेगा अंतर्गत कार्य उपलब्ध कराया गया है की विस्तारपूर्वक जानकारी ली। श्रीमती राजवाड़े ने जिले के किसानों को धान के बदले अन्य फसल लेने के लिए कृषि विभाग के मैदानी अमलों द्वारा जमीनी स्तर पर जागरुक करते हुए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए। उन्होंने खाद्य अधिकारी से धान खरीदी कार्यो की जानकारी ली। जिले में बारदानो की उपलब्धता, धान उठाव की स्थिति, संग्रहण केन्द्रों की भण्डारण क्षमता, छत्तीसगढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली अंतर्गत जारी किये गए राशनकार्ड की संख्या सहित अन्य कार्यों की विस्तारपूर्वक जानकारी लेते हुए सुव्यवस्थित रूप से धान खरीदी कार्य कराये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में विभिन्न निर्माण कार्यों को गुणवत्तापूर्ण करने के निर्देश दिए। मंत्री ने समीक्षा बैठक में महिला एवं बाल विकास विभाग अंतर्गत पूरक पोषण आहार कार्यक्रम, गर्भवती महिलाओ की संख्या, शिशुवती माताओं की संख्या, मुख्यमंत्री बाल संदर्भ योजना, पोषण पुनर्वास केंद्र, नोनी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, सुकन्या समृधि योजना सहित अन्य विभिन्न विभागीय योजनाओं व कार्यों की विस्तार से जानकारी ली। मंत्री ने सक्ती जिले में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका भर्ती प्रक्रिया के वर्तमान स्थिति की जानकारी ली तथा उक्त भर्ती प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता और उचित ढंग से नियमानुसार करने के निर्देश दिए।

वंदे भारत जल्द ही लंबी दूरी के रेल यात्रियों को विश्व स्तरीय यात्रा का अनुभव प्रदान करेंगी

नव वर्ष हाई-स्पीड क्रांति का अग्रदूत : कोटा डिवीजन में वंदे भारत के सफल परीक्षणों के दौरान 180 किमी/घंटा की अधिकतम गति प्राप्त की

दिल्ली (पीआईबी)। रेलवे नये साल में देश में यात्रियों के लिए तेज़ और सुरक्षित रेल यात्रा लाने के लिए तैयार है। छोटी और मध्यम दूरी की चेयर कार ट्रेनों में यात्रा करने वाले लोगों को तेज़, सुरक्षित और विश्व-स्तरीय यात्रा का अनुभव देने के बाद, भारतीय रेलवे लंबी दूरी की ट्रेनों के लिए भी इसे साकार कर रहा है।

आरामदायक यात्रा के साथ अधिकतम गति 180 किमी प्रति घंटा- वंदे भारत स्लीपर ट्रेन ने पिछले तीन दिनों में अपने कई परीक्षणों में 180 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम गति प्राप्त की है। जनवरी के अंत तक यह परीक्षण जारी रहेंगे। उसके बाद देश भर के रेल यात्रियों को लंबी दूरी की यात्रा के लिए यह विश्व-स्तरीय यात्रा उपलब्ध कराई जाएगी। कोटा डिवीजन में सफल परीक्षण का एक वीडियो साझा करते हुए, केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक्स पर अपनी पोस्ट में इसकी गति का उल्लेख किया।

वीडियो में वंदे भारत स्लीपर ट्रेन के अंदर एक मोबाइल के बगल में पानी से भरा गिलास दिखाया गया है। वीडियो में पानी का स्तर स्थिर देखा जा सकता है। चलती ट्रेन 180 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम और स्थिर गति प्राप्त करती है। हाई-स्पीड रेल यात्रा में वंदे भारत यात्रियों को आराम का अनुभव कराती है। यह पोस्ट 3 दिनों के सफल परीक्षणों के बाद आया है, जो 2 जनवरी को समाप्त हुआ, जिसमें वंदे भारत स्लीपर ट्रेन ने अपनी भरी हुई स्थिति में अधिकतम गति प्राप्त की।

गुरुवार को राजस्थान के बूंदी जिले में कोटा और लबान के बीच 30 किलोमीटर लंबे ट्रायल रन के दौरान ट्रेन ने 180 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम गति प्राप्त की। वर्ष 2025 के पहले दिन रोहल खुर्द से कोटा के बीच 40 किलोमीटर लंबे ट्रायल रन में वंदे भारत स्लीपर ट्रेन ने 180 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम गति प्राप्त की। इसी दिन कोटा-नागदा और रोहल खुर्द-चौमहला सेक्शन पर 170 किलोमीटर प्रति घंटे और 160 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम गति प्राप्त की। अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) लखनऊ की निगरानी में ये ट्रायल जनवरी महीने तक जारी रहेंगे।

एक बार ये परीक्षण पूरे हो जाने के बाद, रेलवे सुरक्षा आयुक्त द्वारा अधिकतम गति पर ट्रेन का मूल्यांकन किया जाएगा। अंतिम चरण में सफल होने के बाद ही, वंदे भारत ट्रेनों को आधिकारिक रूप से प्रमाणित किया जाएगा और उन्हें भारतीय रेलवे को शामिल करने और नियमित सेवा के लिए सौंप दिया जाएगा।

वंदे भारत: गति और सुखद यात्रा के साथ लंबी दूरी की रेल यात्रा में बदलाव

इन वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों को स्वचालित दरवाजे, बेहद आरामदायक बर्थ, ऑन बोर्ड वाई-फाई और विमान जैसी डिज़ाइन जैसी सुविधाओं के साथ डिज़ाइन किया गया है। देश में यात्री पहले से ही मध्यम और छोटी दूरी पर चलने वाली 136 वंदे भारत ट्रेनों के माध्यम से शयन सीटों और विश्व-स्तरीय यात्रा अनुभव का आनंद ले रहे हैं। रेलवे के लिए असली चुनौती बर्थ जोड़ना और ट्रेनों को पूर्ण यात्री और सामान लोड की स्थिति के लिए परीक्षण करना था ताकि उन्हें 180 किमी/घंटा की अधिकतम गति प्राप्त करते हुए वंदे भारत स्लीपर कोच में परिवर्तित किया जा सके। इन सफल परीक्षणों के साथ, रेल यात्री कश्मीर से कन्याकुमारी, दिल्ली से मुंबई, हावड़ा से चेन्नई और कई अन्य मार्गों जैसे लंबी दूरी की यात्राओं में विश्व-स्तरीय यात्रा अनुभव की उम्मीद कर सकते हैं। उन्हें यात्रा का समय काफी कम होने से लाभ होगा। मुंबई-दिल्ली लंबी दूरी की यात्रा की वर्तमान औसत गति 90 किमी/घंटा है, जिसमें तेजस राजधानी एक्सप्रेस के लिए अधिकतम स्वीकार्य गति 140 किमी/घंटा है, जो देश में सभी राजधानी ट्रेन सेवाओं में सबसे तेज है। वंदे भारत ट्रेनें अब कई शताब्दी ट्रेन मार्गों पर उपलब्ध हैं। वंदे भारत एक्सप्रेस भारत की सबसे तेज़ ट्रेन है और 180 किमी/घंटा तक की गति तक पहुंचने में सक्षम है। अब तक, यह दिल्ली और वाराणसी जैसे छोटे और मध्यम दूरी के प्रमुख शहरों को जोड़ती है और एक शानदार यात्रा अनुभव प्रदान करती है। वंदे भारत ट्रेनें गति और आराम का एक सहज मिश्रण प्रदान करती हैं। यह केवल यात्रा का एक तरीका नहीं है बल्कि आधुनिक भारतीय इंजीनियरिंग का एक अनुभव है।

जम्मू में स्थापित होगा नया रेलवे डिवीजन, 6 जनवरी को पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन

जम्मू (आरएनएस)। दिल्ली से कश्मीर के लिए सीधी ट्रेन सेवा का सपना अब हकीकत बनने जा रहा है, साथ ही भारत सरकार जम्मू में एक नया रेलवे डिवीजन स्थापित करने की तैयारी कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 जनवरी को वर्चुअली डिविजनल रेलवे मैनेजर (डीआरएम) कार्यालय का उद्घाटन करेंगे। यह कदम जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, और पंजाब के पठानकोट क्षेत्र को फिरोजपुर डिवीजन पर निर्भरता समाप्त करेगा और इन क्षेत्रों में रेलवे संचालन को और अधिक प्रभावी बनाएगा।

अतिरिक्त मंडल रेलवे प्रबंधक राजीव कुमार सिंह ने कहा, रेलवे बोर्ड ने जम्मू में एक नया रेलवे डिवीजन स्थापित करने के लिए एक अधिसूचना जारी की है। इस नए रेलवे डिवीजन के लिए एक अंतिम विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाएगी, जिसे फिर रेलवे बोर्ड में प्रस्तुत किया जाएगा। इसके बाद, इसके क्षेत्राधिकार के संबंध में अंतिम निर्णय लिया जाएगा। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 6 जनवरी को जम्मू रेलवे स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया में वर्चुअल उद्घाटन प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि रेलवे बोर्ड द्वारा यह निर्णय बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जम्मू में नया रेलवे डिवीजन स्थापित होने से लोगों को बड़ा लाभ मिलेगा। पठानकोट से श्रीनगर बारामुला तक रेलवे लाइन, भोगपुर सिरवाल से पठानकोट और बटाला पठानकोट और पठानकोट जोगिंदर नगर नैरोगेज लाइन जैसे प्रमुख मार्गों के संचालन और प्रबंधन का कार्य जम्मू से ही होगा। पहले यह कार्य फिरोजपुर डिवीजन से किया जाता था, लेकिन अब जम्मू से ही सभी कार्यों का प्रबंधन होगा, यह जम्मू वासियों के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि होगी। यह पुरानी मांग थी, जो 2025 में पूरी हो रही है। परिचालन संबंधी सभी निर्णय नए जम्मू डिवीजन से किए जाएंगे, और कर्मचारियों के लिए बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित होगी।

चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष अरुण गुप्ता ने कहा कि सबसे पहले तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने चैंबर की लंबित मांग को पूरा किया। साल 2012 में हमने इस मामले पर अधिकारियों के साथ पहली बार चर्चा की थी और तब से हम लगातार इस दिशा में काम कर रहे थे। हम केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह का भी धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने हमें रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात करवाई। उनके साथ हमारी चर्चा के बाद हमें जम्मू रेलवे डिवीजन प्राप्त करने में सफलता मिली। जम्मू रेलवे डिवीजन की स्थापना से पर्यटन को एक बड़ा बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम समझते हैं कि जम्मू को रेलवे डिवीजन का दर्जा मिलने के बाद यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास होगा, लोगों को रोजगार मिलेगा, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जम्मू से अखनूर और पुंछ तक रेल सेवा का विस्तार होगा। हमारी सोच यह है कि जम्मू से कटरा तक एक मोनोरेल सेवा शुरू हो, ताकि कटरा के लोग जम्मू आकर यहां के सरकारी प्रोजेक्ट्स का दौरा कर सकें और दर्शन के लिए भी आसानी से पहुंच सकें।

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना पर कार्यशाला की गई आयोजित

सूरज के किरपा पाबो, पीएम सूर्यघर योजना अपनाबो छत पर अपन बिजली बनाबो, तीन सौ यूनिट बिजली मुफ़्त पाबो

एक बार का निवेश और जीवन भर की बजट

योजना के तहत घरेलू उपभोक्ताओं को सस्ती दरों पर बिजली उपलब्ध कराने का प्रावधान है।

इस योजना के तहत सौर पैनल इंस्टॉलेशन और मेंटेनेंस के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे। योजना का एक अन्य लाभ है कि यह शहर क्षेत्रो एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की पहुंच बढ़ाने में मदद करेगी, जिससे वहां की जीवनशैली में सुधार होगा।

दुर्ग (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना पर नगर पालिक निगम के स्व.मोतीलाल वोरा सभाकक्ष में कार्यशाला का आयोजन किया गया इस अवसर पर कमिश्नर सुमित अग्रवाल, कार्यपालन अभियंता मोहन पूरी गोस्वामी, दिनेश नेताम, सी.एस.पी.पी.सी.एल आरके दानी, आरके जैन, वीपी मिश्रा, भवन अधिकारी गिरीश दिवान, अंजू देसाई, हरिशंकर साहू, विनोद मांझी, करण यादव, पंकज साहू, विकास दमाहे, प्रेरणा दुबे सहित अधिकारी उपस्थित रहे ट्रेनर द्वारा दीनदयाल अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, मितानिन व निगम कर्मचारियों की टीम गठित को ट्रेनिंग दी गई। कार्यशाला में बताया गया कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का उद्देश्य देश के नागरिकों को सस्ती और स्थायी ऊर्जा मुहैय्या कराना है। कार्यशाला में योजना के फायदे और क्रियान्वयन के तरीकों एवं आवेदन प्रक्रिया के बारे में बारिकी से जानकारी दी गई।

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना सौर पैनलों के माध्यम से घरेलू उपयोग के लिए ऊर्जा उत्पन्न करने पर जोर देती है। इससे न केवल बिजली की कमी को दूर किया जा सकेगा, बल्कि पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। सस्ती बिजली

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने सौर ऊर्जा के महत्व और उसके प्रभावों पर प्रस्तुतियाँ दीं। उन्होंने बताया कि सौर ऊर्जा का उपयोग न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि आर्थिक दृष्टिकोण से भी फायदेमंद है। कार्यशाला में एक संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जहां स्थानीय नागरिकों ने अपनी जिज्ञासाओं को साझा किया तथा विशेषज्ञों ने उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया और उन्हें योजना के फायदों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

इस अवसर पर स्थानीय उदाहरण भी प्रस्तुत किए गए, जहां सौर ऊर्जा के उपयोग से परिवारों ने अपनी बिजली की आवश्यकताओं को पूरा किया है। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का उद्देश्य केवल बिजली प्रदान करना नहीं है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान देना भी है। कार्यशाला में यह भी बताया गया कि यह योजना न केवल ऊर्जा की कमी को दूर करने में मदद करेगी, बल्कि स्थानीय स्तर पर विकास को प्रोत्साहित भी करेगी।

आपत्ति दावा का अंतिम प्रकाशन

प्रधानमंत्री आवास योजना के घटक मोर मकान-मोर आस अंतर्गत अंतिम पात्र/अपात्र की सूची चस्पा

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत मोर मकान-मोर आस अंतर्गत आपत्ति दावा की प्रक्रिया के संपादन पश्चात अंतिम पात्र/अपात्र की सूची प्रकाशित की जा रही है। इस सूची को विभागीय वेबसाईड www.municipalcoporationdurg.in में देखा जा

सकता है तथा यह सूची नगर निगम के मुख्य कार्यालय में एवं डाटा सेंटर स्थित प्रधानमंत्री आवास योजना शाखा में चस्पा किया गया है।

कलेक्टर, एसपी ने किया 36 वां राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का शुभारंम्भ

पम्पलेट वितरण कर यातायात जागरूकता कर रहे

बलरामपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर राजेन्द्र कटारा एवं पुलिस अधीक्षक वैभव बैंकर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विश्व दीपक त्रिपाठी के निर्देषन में "36 वां राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का शुभारंम्भ 1 जनवरी को किया गया। यह जागरूकता अभियान 31 जनवरी तक चलेगा। सड़क सुरक्षा अभियान के प्रथम दिन साप्ताहिक बाजार में आम नागरिकों को यातायात नियमों एवं संकेतों संबधित जानकारी दी गई। तथा यातायात जागरूकता संबंधित पम्पलेट वितरण किया गया।

सड़क सुरक्षा के दुसरे दिन 2 जनवरी को जिला बलरामपुर के नक्सल संवेदन क्षेत्र पुंदाग में कलेक्टर राजेन्द्र कटारा पुलिस अधीक्षक वैभव बैंकर के उपस्थिति में आमजनों को यातायात जागरूकता किया गया। स्कूली छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों एवं संकेतों संबधित जानकारी दी गई।

जिला बलरामपुर के नक्सल संवेदन क्षेत्र पुंदाग में पुलिस द्वारा स्कूली छात्र-छात्राओं से यातायात विषय पर मौखिक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा। जिसमें सही जवाब देने वाले छात्रों को चॉकलेट एवं पुरूस्कार वितरण किया गया।

सड़क सुरक्षा के तीसरे दिन 3. जनवरी को जिला मुख्यालय के शासकीय नवीन महाविद्यालय में यातायात की टीम द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कॉलेज के छात्र/छात्राओं को यातायात नियमों एवं संकेतों संबंधित जानकारी दी गई।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16980/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16980
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **54** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR652R00644** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHARDA DHANGAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MAHESH DHANAGR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती उषा साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री नेमीचंद साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17076/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17076
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **52** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446J01712** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PREMLATA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NAVNEET KUMAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती सुशीला गोंदुडे** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री नरेन्द्र कुमार गोंदुडे** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पंचायत खरोरा, जिला-रायपुर (छ0ग0)

क्रमांक / 1687 / न0पं0 / लो0नि0वि0 / 2024-25 खरोरा, दिनांक 02/01/2025

- :: मैनुअल निविदा आमंत्रण सूचना ::-

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र "अ" में त्रि-लिफाफा पद्धति से निम्नलिखित निर्माण / मरम्मत कार्य हेतु मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

- निविदा प्रपत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि - 20.01.2025 समय 5:00
- निविदा प्रपत्र प्रदाय की अंतिम तिथि - 22.01.2025 समय 5:00
- निविदा दर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय - 24.01.2025 समय 5:00
- निविदा प्रपत्र खोले जाने की तिथि एवं समय - 24.01.2025 समय 5:00

क्र.	प्रस्तावित कार्य	निविदा राशि (लाख में)	अमानत राशि (रू. में)	प्रपत्र	निविदा प्रपत्र शुल्क (रू. में)	कार्य पूर्ण करने हेतु समयावधि
01	वार्ड क्र. 06 में पनखटिया तालाब के पास स्थित सामुदायिक सह सार्वजनिक शौचालय के मरम्मत का कार्य।	1.46	2,000.00	"A"	300.00	02 माह
02	वार्ड क्र. 15 सोमवारी बाजारी के पास स्थित सामुदायिक सह सार्वजनिक शौचालय के मरम्मत का कार्य।	4.18	4,200.00	"A"	750.00	03 माह
03	वार्ड क्र. 08 में नया बस स्टैण्ड के पास स्थित, वार्ड क्र. 08 में सरकारी अस्पताल के पास स्थित, वार्ड क्र. 08 तिगड्डा चौक के पास स्थित वं वार्ड क्र. 01 तहसील ऑफिस के पास स्थित सामुदायिक सह सार्वजनिक शौचालय के मरम्मत का कार्य (04 कार्य)।	1.90	2,000.00	"A"	300.00	02 माह

उपरोक्तानुसार निर्माण / मरम्मत कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर, राशि, विस्तृत निविदा विज्ञति, निविदा दस्तावेज एवं अन्य जानकारी निविदा दिनांक से कार्यालयीन अवधि में देखी व प्राप्त की जा सकेगी, साथ ही यह कि, मैनुअल निविदा की विस्तृत जानकारी कार्यालय न0पं0 सूचना पटल एवं विभाग की वेबसाईट www.uad.cg.gov.in पर भी उपलब्ध है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत खरोरा
जिला-रायपुर (छ0ग0)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16865/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16865
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **50** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445P00149** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MOHAN NILE , SHALINI NILE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. A.R. NILE ,MOHAN NILE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SANAH BAZAZ** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MURLIDHAR AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16970/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16970
वार्ड का नाम- 53 - बाबू जगजीवनराम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 53 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651O00064** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PRAKASH KAMDAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. RAMNIKLAL KAMDAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री जितेन्द्र कुमार लालवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री प्रताप राय लालवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16969/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16969
वार्ड का नाम- 53 - बाबू जगजीवनराम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **53** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651O00065** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PRAKASH KAMDAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE RAMNIK LAL KAMDAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती कशिश लालवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री जितेन्द्र लालवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16930/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16930
वार्ड का नाम- 49 - गुरू घासीदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **49** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR344J00003** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHRI ARIHANT ASSOCIATE DWARA BHAGIDAR MOHAN CHOPDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NEMICHAND CHOPDA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री चंदन कुमार हेमनानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री मनोहर लाल हेमनानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16671/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16671
वार्ड का नाम- 49 - गुरू घासीदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 49 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR344D00061** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VIJU MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. RAMKHILAVAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती संगीता त्रिपाठी 2. श्री संजय कुमार मिश्रा 3. अनिता सोनकवड़े 4. श्रीमती सुनीता कोंडेश्वर** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. पिता स्व. रामखिलावन मिश्रा पति संजय त्रिपाठी 2. पिता स्व. रामखिलावन मिश्रा 3. पिता स्व. रामखिलावन मिश्रा पति. योगेश सोनकवड़े 4. पिता स्व. रामखिलावन मिश्रा पति श्री तिलेन्द्र कोंडेश्वर** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत वसीयत नामा**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17031/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17031
वार्ड का नाम- 55 - रविन्द्रनाथ टैगोर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 55 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651E00227** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KISHOR KIMAR SUHANDANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE T.D. SUHANDANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री शशिकांत घृतलहरे 2. श्रीमती गायत्री** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. पिता श्री भागी घृतलहरे 2. पिता श्री मोती राम भारती पति श्री शशिकांत घृतलहरे** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./12170/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12170
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **54** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR652N0318E** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **हेमंत कुमार त्रिपाठी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता शिव नरेश त्रिपाठी** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती रशीदा अंसारी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री इम्तियाज हुसैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17095/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17095
वार्ड का नाम- 49 - गुरू घासीदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **49** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR344D00369** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. SONAL KHEMANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHAGCHAND KHEMANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **अशोक खेमानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता स्व. दौलत राम खेमानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./17209/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17209
वार्ड का नाम-44-ब्राम्हणपारा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR739A00105** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAMADEVI SHARMA, RASHMI DUBEY, RITA DIWANA, RAKESH KANT SHARMA, DAMYANTI TIWARI, KU. RENUKA SHARMA, SUMITRA TIWARI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM KUMAR SHARMA, VYASNARAYAN DUBEY, SANTOSHADHAR DIWAN, RAHUL KUMAR TIWARI, RAMKUMAR SHARMA, RAHUL KUMAR TIWARI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. रीता दीवान, 2. राकेश कान्त शर्मा, 3. दमयंती तिवारी, 4. कु. रेणुका शर्मा, 5. सुमित्रा तिवारी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **सभी पिता स्व. रामकुमार शर्मा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17084/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17084
वार्ड का नाम- 55 - रविन्द्रनाथ टैगोर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 55 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR651D00201** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAMESHWAR SINGH & OMKARNATH KUSHWAHA & ANIL KUMAR KUSHWAHA S/O SHANKAR KUSHWAHA, SUDHA KUSHWAHA D/O H.L. KUSHWAHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DR RAMKESHWAR URF DR RAMESHWAR SINGH AND SUDHA KUSHWAHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHANKAR PRASAD AND SW. H.L. KUSHWAHA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./17063/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17063
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227S00127** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAM BHAGAT GUPTA** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LT. DINANATH GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHASKAR GUPTA** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LT. RAMBHAGAT GUPTA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./17061/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17061
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331B00044** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **OM PRAKASH PRAJAPATI S/O ANTU RAM AND BIMALA DEVI W/O OM PRAKASH** पिता/पति श्री/श्रीमती ...... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **OM PRAKASH PRAJAPATI** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O ANTU RAM PRAJAPATI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./17207/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17207
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737E0014A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHANKAR LAL RAMANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LATE. BALCHAND RAMANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. अशोक कुमार नवानी पिता- श्री एम.एम. नवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **2. हर्ष नवानी पिता- श्री अशोक नवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./17205/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17205
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737E00005** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHANKAR LAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O BALACHAND RAMANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. अशोक कुमार नवानी पिता- श्री एम.एम. नवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **2. हर्ष नवानी पिता- श्री अशोक नवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16864/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16864
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **50** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446D00309** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VINITA HOTWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PRATAP HOTWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BACHAL BAPANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAGHUNATH RAO** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./16967/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 03-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16967
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445A00241** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JITENDRA MANUJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOPICHAND MANUJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANSHITA MANUJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JITENDRA MANUJA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 04 जनवरी 2025

जिला पंचायत सूरजपुर के सामान्य सभा एवं सामान्य प्रशासन समिति की बैठक में लोकहित के विषयों पर हुई चर्चा

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- जिला पंचायत सूरजपुर के सामान्य सभा की बैठक में विभिन्न विभाग के साथ जिले के विकास के महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुए। इस अवसर पर सदन में जनहित से जुड़े विषयों एवं जिले के लोगों की समस्याओं को लेकर जिला पंचायत सदस्यों एवं जिला प्रशासन के अधिकारियों के द्वारा गंभीर चर्चा की गई। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती राजकुमारी मरावी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक के दौरान विभागों की समीक्षा करते हुए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए। इसके अलावा इस सामान्य सभा की बैठक में उठाये गए विषयों का समय सीमा में निराकरण करने के लिए कहा गया । बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू, जिला पंचायत सदस्यों के साथ जिले के सभी विभागों के जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

इस दौरान जिले में कराए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी सदन में रखी गई। वन विभाग के द्वारा विभाग अंतर्गत किए गए पौधारोपण, मनरेगा अंतर्गत स्वीकृत कार्य के साथ मुख्यमंत्री वृक्ष संपदा योजना और किसान मित्र योजना के प्रगति की जानकारी की जानकारी दी गई। सामान्य प्रशासन समिति की बैठक में स्वास्थ्य विभाग के कार्यों की समीक्षा की गई। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग अंतर्गत ए एन सी रजिस्ट्रेशन, आयुष्मान भारत, मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना सहित स्वास्थ्य विभाग के योजनाओं और आम लोगों को दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं के सम्बन्ध में चर्चा की गई।

इस दौरान कृषि विभाग की योजनाओं, क्रैडा अन्तर्गत सौर सुजला योजना, जल जीवन मिशन में सोलर अधोसंरचना निर्माण, मत्स्य विभाग अंतर्गत मत्स्य सम्पदा योजना पर चर्चा की गई। साथ ही महिला बाल विकास अंतर्गत आंगनबाडियों में दी जा रही सुविधाओं, समस्याओं और बच्चों और महिलाओं के पोषण को लेकर चर्चा की गई। इसके अलावा जिले के बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने हेतु जल जीवन मिशन, पीएम ग्राम सड़क योजना, ग्रामीण आजीविका मिशन, स्वच्छ भारत मिशन ,मनरेगा और स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यों एवं प्रगति की समीक्षा की गई। इस दौरान जलजीवन मिशन के कार्यप्रगति की समीक्षा करते हुए लोगों को हर घर जल कनेक्शन प्रदान करने में तीव्रता लाने के निर्देश दिए।

संक्षिप्त समाचार

सी बी सी मशीन खराब होने से एक वर्ष से रक्त जांच बंद ग्रामीणों ने जीवनदीप समिति की बैठक बुलाने का मांग की

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- विकासखंड सूरजपुर के ग्राम पंचायत अजब नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अजब नगर में एक वर्ष से खराब ब्लड जांच करने वाली सीबीसी मशीन सुधार करने जीवनदीप समिति की बैठक करने की मांग ग्रामीणों ने की है। ग्रामीण बताते हैं कि ग्राम पंचायत अजब नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में करीब प्रत्येक दिन सैकड़ो मरिज आसपास के 12 ,15 पंचायत से स्वास्थ्य लाभ लेने आते हैं। स्वास्थ्य केंद्र में प्रत्येक दिन डिलीवरी से लेकर छोटी-मोटी ऑपरेशन तक होती है मलेरिया और टाइफाइड की मरीज भी बहुत ज्यादा आते हैं लेकिन एक वर्ष से सीबीसी मशीन खराब होने से सभी मरीजों को बहुत परेशानीहो रही है आज तक सुधार नहीं हो पाया और 10,11 माह से जीवनदीप समिति की भी बैठक नहीं हो पाई है जिससे छोटे-मोटे परेशानियों का निराकरण नहीं हो पा रहा है ग्राम वासियों ने कलेक्टर से मिलकर तत्काल निराकरण करने की मांग की गई है । ग्रामीणों ने ज्ञापन देने भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष देव धन राम बिनझिया भाजपा मंडल महामंत्री संदीप सरकार, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष पवन बर्मन गोकुल चौधरी राधा बाला अन्य ग्रामीण शामिल थे ।

अंग्रेजी व्याख्याता अभिलाषा ठाकुर बिहारपुर से विश्रामपुर शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थानांतरित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-शिक्षा का स्तर सुधारने एवं कसावट लाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ राज्य शासन के शिक्षा विभाग ने अपने आठ शिक्षक एवं व्याख्याताओ को एक स्थान से दूसरे स्थान के विद्यालयों में स्थानांतरित किया है जिसमें शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिहारपुर की अंग्रेजी व्याख्याता श्रीमती अभिलाषा ठाकुर भी शामिल है। जानकारी के अनुसार श्रीमती अभिलाषा ठाकुर विश्रामपुर शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में स्थानांतरित की गई है जो आज विद्यालय में अपना पदभार भी ग्रहण कर लिया है जिससे विद्यालय के छात्राओं ने प्रसन्नता व्यक्त की है। जानकारी के अनुसार राज्य शासन के स्कूल विभाग द्वारा अपने शासकीय सेवकों का स्थानांतरण प्रशासनिक आधार पर किया है ।यह स्थानांतरण अवर सचिव छत्तीसगढ़ आर पी वर्मा द्वारा की गई है, जिनमें प्रियंका करे शिक्षक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कलचा जगदलपुर से शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बेवरती जिला कांकेर, तरुण मंडल व्याख्याता शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कलचा जगदलपुर से शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बेवरती कांकेर, अनीता भगत शिक्षक माध्यमिक विद्यालय मंजीरा सूरजपुर से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हरिहरपुर प्रतापपुर, अभिलाषा ठाकुर अंग्रेजी व्याख्याता शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिहरपुर से शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिश्रामपुर ,प्रियंका गुप्ता जीव विज्ञान व्याख्याता शासकीय हाई स्कूल चौरा राजपुर से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भटगांव सूरजपुर, मधु राजपूत शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बंजी महेंद्रगढ़ से शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला भंडार खोल कोरबा, टिकेश्वर साहू व्याख्याता जीव विज्ञान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिक सोड कोयली बेड़ा से शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय डोंडी बालोद एवं प्राचार्य बी आर सोनवानी धरमजयगढ़ से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नवागांव गौरेला पेंड्रा मरवाही स्थानांतरित किए गए हैं।

हैवी वाहन चालकों को दी यातायात नियमों की जानकारी, ट्रैफिक नियमों का पालन करने से होगी जान-माल की सुरक्षा

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर ने जिलेवासियों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के साथ थी हैवी वाहन चालकों को ट्रैफिक नियमों से अवगत कराकर उसका पालन करने की हिदायत दी है। पुलिस कप्तान की हिदायत पर आज तीन जनवरी को चौकी प्रभारी खड़गवां के द्वारा जगन्नाथपुर महान-3 खदान में कोयला परिवहन कर रहे हैवी वाहन चालकों व मौजूद वर्करों को यातायात नियमों के बारे में विस्तार से जानकारी दिया और कहा कि सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं को कम करने के लिए ट्रैफिक नियमों का पालन करना बेहद जरूरी है।

इस दौरान चौकी प्रभारी खड़गवां योगेन्द्र जायसवाल ने खदान में मौजूद 400 वाहन चालकों व खदान में मौजूद वर्करों को बताया कि शराब पीकर वाहन न चलाए, वाहन चलाने के दौरान मोबाईल का उपयोग न करें, वाहन की हेड लाईट व इंडिकेटर ठीक काम कर रही है या नहीं उसे नियमित चेक करें, मालवाहक वाहन में कभी को सवारी न बैठाये, कोयला परिवहन करते समय कोयला को तिरपाल से कवर कर परिवहन करें, ओवर स्पीडिंग से बचें क्योंकि ओवर स्पीडिंग से रोड एक्सिडेंट का खतरा कई गुना बढ़ जाता है, निर्धारित स्पीड लिमिट का पालन कर सावधानी से वाहन चलाए। दो पहिया वाहन चलाने के दौरान हेलमेट का उपयोग अवश्यक करें, तीन सवारी कभी न चले। चौकी प्रभारी ने प्रमुखता से कहा कि सड़क सुरक्षा सभी की जिम्मेदारी है और सभी ट्रैफिक नियमों का पालन करेंगे तो जान-माल के नुकसान से बचा जा सकता है।

कन्या स्कूल विश्रामपुर की छात्राओं ने किया सुपरमार्ट का भ्रमण

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विश्रामपुर की प्राचार्य आशीष कुमार भट्टाचार्य के मार्गदर्शन में विद्यालय में संचालित व्यावसायिक पाठ्यक्रम रिटेल विभाग के कुल 150 छात्राओं ने एन.वी.सुपर मार्ट सूरजपुर का भ्रमण किया। सुपर मार्ट के मैनेजर श्री साहिल सिंह के सहयोग से रिटेल मार्केटिंग से संबंधित जानकारी छात्राओं को उपलब्ध कराया गया जिसमें छात्राओं ने बिलिंग प्रोसेस, डिस्प्ले प्रोडक्ट, कस्टमर हैंडलिंग के बारे में जानकारी प्राप्त की।। कार्यक्रम का आयोजन व्यावसायिक प्रशिक्षक थलेश्वर राजवाड़े के द्वारा किया गया।

अवैध 11 क्विंटल कोयला जप्त, चौकी खड़गवां पुलिस ने की कार्यवाही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर ने अवैध कारोबार पर शत-प्रतिशत अंकुश लगाने के सख्त निर्देश थाना-चौकी प्रभारियों को दिए है। इसी क्रम में दिनांक 3जनवरी को चौकी खड़गवां पुलिस को मुखबीर से सूचना मिली कि जगन्नाथपुर महान-3 के खदान से चोरी की गई कोयला को ग्राम जगन्नाथपुर में लावारिश हालत में डम्प किया गया है। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची जहां करीब 11 क्विंटल अवैध कोयला कीमत करीब 6600 रूपये का डम्प होना पाया जिसे जप्त कर धारा 106 बीएनएसएस के तहत जप्त कर आगे की कार्यवाही की जा रही है। इस कार्यवाही में चौकी प्रभारी योगेन्द्र जायसवाल, प्रधान आरक्षक विनय, आरक्षक अशोक कनौजिया, मनोज राय, अनिल, हरिशंकर सिंह व विकास सिंह सक्रिय रहे।

जीवन है अनमोल घर में कोई कर रहा है इंतजार यातायात नियमों का करें पालन

ट्रैफिक रूल के उल्लंघन पर 212 वाहन चालकों पर की गई कार्रवाई, 79800 रूपये वसूल की गई समन शुल्क

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के निर्देश पर जिले की पुलिस सड़क हादसों से बचाव के लिए लोगो को जागरूक करने के साथ ही यातायात नियमों का पालन नहीं करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही भी कर रही है। गुरूवार, 02 जनवरी को जिले के थाना-चौकी व यातायात पुलिस ने ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करने वाले 212 लोगों पर कार्यवाही करते हुए 79800 रूपये का समन शुल्क वसूल किया है।

थाना-चौकी प्रभारी सहित यातायात पुलिस के द्वारा विभिन्न चौक-चौराहों, अंर्तराज्जीय व जिले की सरहदी क्षेत्र में स्थित बैरियर में सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाकर 212 वाहन चालक जो बिना हेलमेट, बिना सीट बेल्ट, नियम तोड़ने, बिना नंबर वाहन चलाते पाए जाने पर उनके विरूद्ध मोटर व्हीकल एक्ट के तहत् कार्यवाही कर 79800 रूपये का समन शूल्क अर्जित कर शासन के कोष में जमा किया।

सूरजपुर पुलिस ने वाहन चालकों से अपील किया है कि जिले की यातायात व्यवस्था को सुगम सुरक्षित बनाने में पुलिस का सहयोग करें, यातायात नियमों का पालन करें, शराब का सेवन कर वाहन न चलाए, वाहन चलाते समय मोबाईल का उपयोग न करें, अपने नाबालिक बच्चों को कभी भी वाहन न दे जब-तक वे 18 वर्ष के न हो जाये व परिवहन विभाग से वाहन चलाने का वैध लायसेंस न बना ले। दोपहिया में तीन सवारी न चले, बिना हेलमेट बाईक न चलाए, बिना सीट बेल्ट चार पहिया वाहन न चलाए, दुर्घटना से देर भली-जीवन अनमोल है। यातायात नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करने व चेकिंग अभियान में जिले के सभी थाना-चौकी व यातायात पुलिस मजबूती के साथ लगी हुई है।

कमजोर बच्चों के परीक्षा परिणाम सुधारने में शिक्षकों का हो फोकस-कलेक्टर

कलेक्टर श्री गोयल ने कहा स्कूलों में परीक्षा परिणाम बेहतर करना शिक्षकों का दायित्व

रायगढ़(विश्व परिवार)। स्कूलों का परीक्षा परिणाम सुधारने कमजोर प्रदर्शन वाले बच्चों पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। खासकर दसवीं एवं बारहवीं के बच्चे जो इस साल बोर्ड की परीक्षा में बैठेंगे। सभी प्राचार्य एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि अर्द्धवार्षिक परीक्षा में जिन बच्चों के परिणाम अच्छे नहीं रहे है उन बच्चों पर अधिक मेहनत की जाए। ये बातें कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल ने आज शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में कही। कलेक्टर कार्तिकेया गोयल आज शिक्षा विभाग की बैठक में अर्धवार्षिक परीक्षा के परिणामों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों का लक्ष्य स्कूलों का उत्कृष्ट परिणाम होना चाहिए। उन्होंने परीक्षा परिणामों की समीक्षा के दौरान कमजोर प्रदर्शन वाले स्कूलों पर गहरी नाराजगी जतायी और ऐसे प्राचार्यों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। साथ ही हिदायत देते हुए कहा कि आगे प्री-बोर्ड परीक्षाएं होनी है इसके लिए अभी से अपनी तैयारी शुरू करें, इसमें किसी प्रकार की लापरवाही नहीं चलेगी। जिला शिक्षा अधिकारी से लेकर सभी बीईओ और संकुल समन्वयक सुनिश्चित करें कि स्कूलों में अध्यापन का कार्य अच्छे से हो। रायगढ़ जिला का परीक्षा परिणाम बीते सालों से बेहतर करना आप सभी का दायित्व है। उन्होंने कहा कि लापरवाही करने वालों की जिम्मेदारी तय करते हुए कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि स्कूली जीवन किसी भी छात्र की जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण साल होते है। माता-पिता बच्चों को स्कूलों में सर्वांगीण विकास के लिए भेजते है। शिक्षक के रूप में छात्रों को अपने जिले के साथ पूरे देश के लिए एक सक्षम बुद्धिमता के मानव संसाधन के रूप में तैयार करना शिक्षकों का कर्तव्य है। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि स्कूलों में सुनिश्चित किया जाए कि स्कूलों में सभी शिक्षक समन्वय से काम करें। किसी भी स्कूल का परीक्षा परिणाम वहां के शिक्षकों का सामुहिक उत्तरदायित्व होता है। ग्रामीण इलाकों में बच्चों के अनुपस्थिति के बाते भी आती रहती है। ऐसे पालकों से संपर्क कर शिक्षक बच्चों को स्कूल आने के लिए प्रेरित करें। आवश्यकता पडने पर शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों का भी सहयोग लें। कलेक्टर गोयल ने भाषा के साथ-साथ गणित व विज्ञान विषय पर विशेष रूप से ध्यान देने के निर्देश दिए। बच्चों को बोर्ड परीक्षा के अभ्यास के लिए सिलेबस कम्पलीट कराते हुए पिछले सालों के प्रश्न पत्र जरूर हल करवायें, आवश्कता पडने पर एक्सट्रा क्लासेस लें। बैठक में सीईओ जिला पंचायत जितेन्द्र यादव, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.के.वी.राव, डीएमसी श्री नरेन्द्र कुमार चौधरी सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी व जिले के सभी हाई एवं हायर सेकेण्ड्री स्कूलों के प्राचार्य उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि सभी स्कूलों में छात्रों को रोज अखबार पढ़वायें। अखबार के संपादकीय पृष्ट को विशेष रूप से प्रार्थना असेम्बली में छात्रों को पढने के लिए कहे। इससे देश-दुनिया में चल रहे सम-सामयिक विषयों पर उनकी पकड़ मजबूत होगी और स्टेज से बोलने का भय दूर होगा। इसके साथ ही उन्होंने स्कूलों में लाईब्रेरी का पीरियड अनिवार्य रूप से रखने जहां संभव हो वहां बुक क्लब बनाकर पुस्तक पाठन के लिए छात्रों को प्रेरित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफ्ल होने के लिए छात्रों के भीतर दो स्किल अनिवार्य रूप से होने चाहिए।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शनिवार 04 जनवरी 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

अब समय आ गया और सरल कर व्यवस्था जरूरी

नई सहमति ज्यादा अहम

मानव सरोवर की यात्रा फिर शुरू करने और द्विपक्षीय व्यापार सुगम बनाने संबंधी सहमतियां डोवाल- वांग वार्ता का व्यावहारिक नतीजा हैं। दूरगामी नजरिए से सीमा विवाद के हल पर 2005 में तय हुईं राजनीतिक कसौटियों पर नई सहमति ज्यादा अहम है।भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच सीमा विवाद के निपटारे पर बीजिंग में हुई वार्ता का सार यह है कि चार साल तक तनावपूर्ण रहने के बाद दोनों का रिश्ता अब पटरी पर लौट रहा है। भारतीय प्रतिनिधि अजित डोवाल और चीनी प्रतिनिधि वांग यी की वार्ता में, चीनी विदेश मंत्रालय की विज्ञप्ति के मुताबिक, छह सूत्री सहमति बनी। भारतीय विज्ञप्ति में उन छह सूत्रों का स्पष्ट उल्लेख तो नहीं है, लेकिन कहा गया है कि दोनों विशेष प्रतिनिधियों ने आपसी रिश्ते को सकारात्मक दिशा प्रदान की है। तिब्बत के रास्ते से मानव सरोवर की यात्रा फिर शुरू करने और द्विपक्षीय व्यापार को सुगम बनाने संबंधी सहमतियां इस वार्ता का व्यावहारिक नतीजा हैं। मगर दूरगामी लिहाज से सीमा विवाद हल करने के लिए 2005 में दोनों देशों के बीच तय हुईं राजनीतिक कसौटियों पर नई सहमति ज्यादा अहम है। 1988 से 2005 तक भारत- चीन संबंध सकारात्मक दिशा में थे। उसी क्रम में 2005 में बनी सहमति को एक बड़ी कामयाबी माना गया था। डोवाल- वांग वार्ता में इस पर भी जोर दिया गया कि सीमा विवाद का हल पैकेज के रूप में होगा। यानी पूरब में अरुणाचल और पश्चिम में लद्दाख सीमाओं पर जो मतभेद हैं, उन पर एकमुश्त सहमति बनाई जाएगी। हर समाधान का आधार लेन-देन की भावना होती है। दोनों देश अगर इस भावना पर रजामंद हो रहे हों, तो आशा की जा सकती है कि इस लंबे विवाद का हल निकल आएगा। बहरहाल, इस रास्ते में अनेक दिक्कतें हैं। दोनों देशों की अंदरूनी राजनीतिक प्रक्रिया और अंतरराष्ट्रीय पहलुओं का साया भारत-चीन संबंधों पर पड़ता रहा है। इसके अलावा यह देखना होगा कि क्या सचमुच अब नए सिरे से उभर रही सहमतियों पर चीन कायम रहता है। भारत में अक्सर यह संदेह रहा है कि ऐसी सहमतियों का इस्तेमाल चीन सीमा के करीब अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए करता है। वैसे चीन से बेहतर रिश्ता दोनों देशों की आर्थिक जरूरत है, जैसाकि इस वर्ष संसद में पेश हुए आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया था। इसलिए फिलहाल चीजें पटरी पर लौट रही हैं, तो उसे एक सकारात्मक घटनाक्रम कहा जाएगा।

डा. जयंती लाल भंडारी

अब समय आ गया है कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा की खरीददारी पर लगने वाले 18 फीसदी जीएसटी में राहत सुनिश्चित की जाए। क्रिक कॉमर्स कंपनियों पर लगने वाले जीएसटी को लेकर निर्णय लिया जाए यद्यपि सरकार सरल कर व्यवस्था के लिए एक के बाद एक लगातार कदम आगे बढ़ा रही है, लेकिन अभी और अधिक सरल कर व्यवस्था जरूरी दिखाई दे रही है। हाल ही में 21 दिसंबर को जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) काउंसिल की जैसलमेर में हुई 55वीं बैठक में जीएसटी के सरलीकरण व राहत संबंधी कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। खास तौर से छोटे कर्जदारों को राहत देते हुए यह कहा गया है कि ऋण शर्तों का पालन नहीं करने पर ऋणदाताओं द्वारा जो जुर्माना लगाया जाएगा, उस पर कोई जीएसटी नहीं लगेगा। खास किस्म के फोर्टिफाइड चावल पर जीएसटी कम किया गया है। कैंसर की जीन थेरेपी को कर मुक्त किया गया है। इस्तेमाल शुदा यानी पुराने वाहनों की बिक्री पर कर दर को 18 फीसदी कर दिया गया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष अगस्त 2024 में आयकर अधिनियम सरल बनाने के लिए मुख्य आयकर आयुक्त वीके गुप्ता की अध्यक्षता में गठित समिति कर रियायतों को तर्कसंगत बनाने, कर गणना के तरीके का स्तर बढ़ाकर इसे विश्वस्तरीय बनाने और अपील करने की व्यवस्था में जटिलता कम करने करने संबंधी सुधारों पर तेजी से काम कर रही है। यह समिति कर विशेषज्ञों और विभिन्न निकायों से प्राप्त सिफारिशों की समीक्षा कर रही है। ज्ञातव्य है कि आयकर अधिनियम 1961 की करीब 90 धाराएं अपनी प्रासंगिकता खो चुकी हैं। ये धाराएं विशेष आर्थिक क्षेत्र, दूरसंचार, पूंजीगत लाभ सहित कर छूट एवं कटौती जैसे मामलों में कारगर नहीं रह गई हैं। मौजूदा स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस), स्रोत पर कर संग्रह (टीसीएस) व्यवस्था को सरल करने के लिए सीमा शुल्क कानून की तरह ही समिति दरों की एक व्यापक अनुसूची बनाने पर आगे बढ़ रही है। इससे कानूनी जटिलताएं और मुकदमेबाजी में काफी कमी आएगी तथा कर कटौती प्रक्रिया अधिक सरल और पारदर्शी होगी। उम्मीद है कि वीके गुप्ता समिति की रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत होगी और इसके आधार पर विधि मंत्रालय की मदद से नए आयकर विधेयक का मसौदा तैयार किया

जाएगा। निश्चित रूप से पिछले एक दशक में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों में तेज सुधारों का सिलसिला लगातार बढ़ा है और इससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। पिछले एक दशक से आयकर कानून में जो अहम सुधार किए गए हैं उससे जहां आयकरदाताओं को सुविधा मिली, वहीं आयकरदाताओं की संख्या बढ़ाने में भी मदद मिली है। इन सुधारों में प्रमुख रूप से 25 सितंबर 2020 से पूरे देशभर में लागू करदाताओं के लिए पहचान रहित अपील (फेसलेस अपील) व्यवस्था और वर्ष 2019 में लागू करदाता चार्टर (टैक्सपेयर चार्टर) और पहचान रहित समीक्षा (फेसलेस असेसमेंट) जैसे बड़े आयकर सुधार प्रमुख हैं। इसके अलावा नॉन फाइलर्स, मॉनिटरिंग सिस्टम (एनएमए) के जरिए ऐसे लोगों की पहचान की जाती है जिन्होंने हाई वैल्यू ट्रांजैक्शन किया है, पर आयकर रिटर्न दाखिल नहीं किया है। पिछले 10 वर्षों में आयकर संग्रह में करीब 182 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2023-24 में व्यक्तिगत आयकर संग्रह लगभग चार गुना बढ़कर 10.45 लाख करोड़ रुपए का रहा। यह भी कोई छोटी बात नहीं है कि आयकर वर्ष 2023-24 में 8.09 करोड़ से ज्यादा रिकॉर्ड आयकर रिटर्न दाखिल किए गए। साथ ही मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 में पिछले वर्ष से अधिक आयकर रिटर्न और अधिक आयकर प्राप्ति का परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। जिस तरह देश में आयकर संबंधी सुधारों से आयकरदाताओं की संख्या और आयकर राशि में तेजी से इजाफा हुआ है, उसी तरह देश में अप्रत्यक्ष करों में ऐतिहासिक सुधार कहा जाने वाला वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) 1 जुलाई 2017 से लागू हुआ है। इसके तहत केंद्र और राज्य सरकार के स्तर पर लगने वाले 17 केंद्रीय और राज्य स्तरीय टैक्स के साथ-साथ करीब 23 अलग-अलग तरह के उपकरों को समाहित किया गया है। जीएसटी विनिर्माताओं, कारोबारियों, निर्यातकों और आम लोगों के लिए लाभप्रद माना गया है। जीएसटी लागू होने के पूर्व वित्त वर्ष 2016-17 में अप्रत्यक्ष कर संग्रह (केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर और सीमा शुल्क आदि) से करीब 8.63 लाख करोड़ रुपए की प्राप्ति हुई थी। जीएसटी लागू होने के बाद जीएसटी से टैक्स संग्रहण तेजी से बढ़ रहा है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 के लिए जीएसटी का संग्रहण 20.18 लाख करोड़ रुपए पहुंच गया, जो पूर्ववर्ती साल के मुकाबले 11.7 फीसदी वृद्धि को दिखाता है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में अप्रैल से नवंबर 2024 के बीच जीएसटी संग्रह पिछले वर्ष की इस अवधि के मुकाबले 9 फीसदी बढ़कर 14.56 लाख करोड़ रुपए हो गया है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि दुनिया की तेज बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था के तहत बढ़ते उद्योग-कारोबार, सर्विस सेक्टर, शेयर बाजार और मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति की नई ऊंचाइयों के कारण देश में टैक्स संग्रहण में तेज वृद्धि हो रही है। वस्तुत: कर संग्रह में तेज वृद्धि से बुनियादी ढांचे, सामाजिक सेवाओं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार की क्षमता बढ़ रही है। सरकार की मुट्ठियों में बढ़ता कर राजस्व न केवल अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण में मदद कर रहा है, बल्कि यह सरकार को अपने करदाताओं के प्रति जवाबदेह भी बना रहा है। नि:संदेह देश में कर सुधारों से आयकर और जीएसटी के संग्रहण में आशातीत वृद्धि हुई है। लेकिन अभी भी इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत में कर से जीडीपी अनुपात 11.7 फीसदी के स्तर पर ही पहुंचने का अनुमान है, जो कि दुनिया के कई विकासशील देशों में यह अनुपात भारत से अधिक है। ऐसे में देश में आयकर और जीएसटी के कर दायरे में इजाफा किए जाने की बड़ी संभावनाएं हैं। चूंकि देश ने 2047 में विकसित भारत का लक्ष्य रखा है, उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए कर सुधारों के साथ कर संग्रह में लगातार इजाफा जरूरी होगा और तकनीक के ज्यादा इस्तेमाल से कर संग्रह में वृद्धि तेज की जानी होगी। ऐसे में यह उपयुक्त होगा कि आयकर अधिनियम को सरल बनाने के लिए गठित की गई वीके गुप्ता समिति शीघ्रतापूर्वक अपनी रिपोर्ट पूर्ण करते हुए इस बात पर ध्यान दे कि प्रति व्यक्ति आय के लिए छूट की सीमा को कम करने के मद्देनजर छूट के स्तर को निकट भविष्य में अपरिवर्तित रखा जाए। समिति को ध्यान देना होगा कि करदाताओं की संख्या में इजाफा कर व्यवस्था को अधिक निष्पक्ष बनाया जाए ताकि इससे कर भुगतान को लेकर दृष्टिकोण को सही दिशा में बढ़ावा मिल सके। साथ ही विभिन्न दृष्टिकोणों से आयकर प्रणाली को सरल बनाने की दिशा में आगे बढ़ने की रणनीति प्रस्तुत की जानी होगी। इसी प्रकार जीएसटी की जटिलताओं को कम करके इसे अधिक सरल व कारगर बनाना होगा। नई टेक्नोलॉजी के उपयोग से जीएसटी अनुपालन जितना अधिक कारगर होगा, उतना ही अधिक जीएसटी संग्रह बढ़ाया जा सकेगा। इसके अलावा सरकार के द्वारा जीएसटी चोरी के खिलाफ प्रभावी अभियान चलाया जाना होगा, क्योंकि अभी कई कारोबारी फर्जी बिल के इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ उठा रहे हैं। टैक्स चोरी रोकने के लिए प्रशासनिक स्तर पर भी प्रभावी बदलाव किए जाने होंगे। जीएसटी दरों को कम करने के साथ जीएसटी स्लैब को तर्कसंगत बनाया जाना होगा। अब समय आ गया है कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा की खरीददारी पर लगने वाले 18 फीसदी जीएसटी में राहत सुनिश्चित की जाए। क्रिक कॉमर्स कंपनियों पर लगने वाले जीएसटी को लेकर निर्णय लिया जाए। साथ ही पेट्रोलियम उत्पादों और जमीन व रियल एस्टेट को भी जीएसटी के दायरे में लाया जाए।

आलेख

स्वस्थ मध्यप्रदेश-सशक्त मध्यप्रदेश को मूर्त रूप देने उठाये गए सशक्त कदम

मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और उनकी गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर प्रयासरत है। स्वस्थ मध्यप्रदेश की संकल्पना को साकार करने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इससे प्रदेश के हर नागरिक को सुलभ, निःशुल्क और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं। प्रदेश सरकार का संकल्प है कि हर नागरिक को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिलें और प्रदेश एक आदर्श स्वास्थ्य मॉडल के रूप में स्थापित हो। आत्मनिर्भर और समृद्ध मध्यप्रदेश के निर्माण के लिये प्रदेश सरकार निरंतर अपने प्रयासों को आगे बढ़ा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग का एकीकरण किया गया है। इस कदम से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और मेडिकल कॉलेजों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हुआ है। साथ ही मरीजों को समय पर और बेहतर इलाज मिलना सुनिश्चित हुआ है। 0-46 हजार 491 नए पदों का सृजन-स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए मानव संसाधनों में भी उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने %पब्लिक हैल्थ कैडर' की शुरुआत की है। इसमें 46,491 नए पदों का सृजन किया गया है, जिन्हें अगले दो वर्षों में भरा जाएगा। इस पहल से प्रदेश के अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में कर्मचारियों की कमी दूर होगी और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आएगा। प्रदेश में निःशुल्क दवाएं और जांच सेवाएं भी व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिला अस्पतालों में अब 530 प्रकार की दवाएं और 132 प्रकार की जांच सेवाएं उपलब्ध हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में भी 80 प्रकार की जांच सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इन प्रयासों से गरीब और जरूरतमंद मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल रही हैं। प्रदेश में 11,789 हैल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स सक्रिय किए गए हैं, जहां नागरिकों को घर के पास उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं। इन सेन्टर्स से अब तक 3.62 करोड़ से अधिक दवाइयाँ वितरित की जा चुकी हैं और 2.91 करोड़ से अधिक जांचें की जा चुकी हैं। इसके अलावा, टेलीमेडिसिन सेवाओं के अंतर्गत 20.47 लाख से अधिक कॉल्स के जरिए ग्रामीण इलाकों के मरीजों को विशेषज्ञ डॉक्टरों की सलाह उपलब्ध कराई गई है। आयुष्मान भारत योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अग्रणी है। अब तक प्रदेश में 4 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं, जिनमें 99त्न कार्डों का आधार द्द-यङ्घष्ट सत्यापन हो चुका है। 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के 9 लाख वरिष्ठ नागरिकों के कार्ड बनाए गए हैं। यह योजना गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा की एक मजबूत गारंटी बन चुकी है। 70 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बनाने में मध्यप्रदेश शीर्ष पर है। प्रदेश में पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा की शुरुआत की गई है। इससे दूर-दराज के क्षेत्रों से गंभीर मरीजों को तत्काल बड़े अस्पतालों में पहुंचाकर जीवनरक्षक उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। यह सेवा स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और सुधार में एक महत्वपूर्ण कदम है। चिकित्सा शिक्षा को मजबूत करने के लिए प्रदेश में मेडिकल कॉलेजों का विस्तार किया गया है। वर्ष-2003 तक प्रदेश में केवल 5 शासकीय मेडिकल कॉलेज थे, जो अब बढ़कर 17 हो गए हैं। एमबीबीएस सीटों की संख्या 720 से बढ़कर 2,575 हो गई है। आगामी 2 वर्षों में 8 और शासकीय मेडिकल कॉलेज बनाये जाएँगे। इसके अलावा, 12 जिलों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के तहत मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। प्रदेश में नर्सिंग और पैरामेडिकल शिक्षा संबंधी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिये सभी आवश्यक प्रबंध किये जा रहे हैं। वर्तमान में 24 शासकीय नर्सिंग कॉलेज संचालित हैं, 14 और मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। इससे प्रदेश में जल्द ही 38 नर्सिंग कॉलेज हो जाएंगे। 250 पैरामेडिकल कॉलेजों में लगभग 25,000 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए मेडिकल सिटी-मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए मेडिकल सिटी की स्थापना उज्जैन में की जा रही है।

भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए मनमोहन सिंह

श्रुति व्यास

सिर्फ दस साल पहले की बात है, मगर मानों ज़माना गुज़र गया हो। दस साल पहले भारत भूखा था नए विजन, नई दृष्टि का। हर कोई तरक्की और अच्छे दिनों के लिए फडफडाता हुआ था। दस साल पहले लग रहा था, सबकी फील थी, भारत बढ़ रहा है। भारतीय आगे बढ़ रहे हैं। आज, लफ्फाजी और प्रोपेगेंडा है। मैं, सन् 2007 में, स्काटलैंड में सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। भारत की राजनीति की न सुध थी और न ज्यादा जानकारी। पतझड़ के आखिरी दिनों की एक सर्द दोपहर में, मैं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अपनी टुटोरिअल क्लास शुरू होने का इंतजार कर रही थी। विश्वविद्यालय की इमारत खामोश थी, मानों आराम कर रही हो। सभी लोग लंच के लिए गए हुए थे। मैं लंच और सुकून चैन के मूड में थोड़ी जल्दी वापस पहुंच गई। मेरे अलावा वहां एक और व्यक्ति था, जो अपने कपड़ों से खांटी अमीर,कुलीन अंग्रेज लग रहा था। लेकिन वह था एक मेक्सिकन रईसजादा जो स्विटजरलैंड में रहता था। दुआ-सलाम के बाद हम आमने-सामने बैठ गए और मैं खाना शुरू करने ही वाली थी कि उसने मेरे पर सवाल दागा, क्या तुम्हे इंडियन होने पर गर्व है? मैंने हैरानी और नाराजगी से उसे देखा। वह मेरे चैन, इतमीनान से पैनिनी इम्बोटिटो के स्वाद में खलल थी। वो आंखे फैलाकर लगातार मुझे घूर रहा था। मेरा जवाब जानने को बेताब था। मैंने अपना सैंडविच लपेटते हुए उसकी ओर देखा और बेलौस जवाब दिया, हां, बिलकुल है। लेकिन वो मेरे जवाब से न तो खुश हुआ और ना उसे उस पर भरोसा हुआ। उसने दुबारा पूछा, क्या वाकई तुम्हे गर्व है? (क्या आप सचमुच?) मैंने उसकी ओर सवाल उछाला, क्या तुम्हे अपने मेक्सिकन होने पर गर्व नहीं है। उसने तपाक से कहा नहीं। मैंने हैरानी से उसकी ओर देखा। मैं सोच रही थी कि किसी को अपने देश से प्यार न हो, भला ऐसा कैसे संभव है! वह भी शायद मेरी ओर देखते हुए सोच रहा था कि इसका उलट कैसे संभव है। इसके पहले कि चर्चा आगे बढ़ती, छात्रों के लौटने का सिलसिला शुरू हो गया। हम दोनों अपने-अपने समूहों से घिर गए और बातचीत यहीं समाप्त हो गई। इसके बाद कभी वह अधूरी चर्चा पूरी न हो सकी। लेकिन मेरे मन में हमेशा सवाल कौंधता रहा कि उसके मन में ऐसा सवाल क्यों आया? जब मैं स्काटलैंड गई थी तब भारत दृरुत गति से फल-फूल रहा था जबकि ब्रिटेन मंदी में डूब-उतर रहा था। जैसा कि मैंने विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु आवेदनों में %अपने वक्तव्य' में कहा था, भारत बदलाव के कगार और सबसे तेजी से बढने वाली अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। इसमें तब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी। हमारा शेयर बाजार तेजी से बढ़ रहा था, व्यापार-व्यवसाय में नए प्रयोग हो रहे थे, लोकतंत्र जिंदा था और माहौल उत्साहपूर्ण था। विकसित देशों में रह रहे मेरे मित्र कहते थे, कम से कम तुम्हारे पास तो वापस जाने का विकल्प है ही। भारत में आसानी से तुम्हे काम मिल जाएगा। मैं गर्वित और अच्छा फील करती थी। भारत बदल रहा था और हरेक व्यक्ति इसे देख और महसूस कर सकता था। जब मैं बड़ी हो रही थी तब भी मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि ऐसी कोई चीज है जो मैं खो रही हूं, जो मेरे पास नहीं है। निश्चित तौर पर कुछ नियम-कानून और प्रतिबंध थे, जिनका पालन हमें करना पड़ता था। मगर जिंदगी इतनी बुरी भी नहीं थी। एक बच्ची बतौर मेरा जीवन उदास नहीं था। हम रोज एक घंटे कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर सकते थे और शाम को केबिल टीवी देख सकते थे, हमें स्कूल ले जाने के लिए कार थी और समय-समय पर हमें नए आधुनिक खिलौने और गेम मिल जाते थे। ये सभी उस समय भारत में आसानी से उपलब्ध थे। हम लोगों को सिनेमा भी ले जाया जाता था और छुट्टियों में हम शहर के बाहर भी जाते थे। आज जब मैं पीछे मुड़कर उस दौर को याद करती हूं तो मुझे लगता है कि हमारा बचपन खुशनुमा इसलिए था क्योंकि उस दौर में भारत और भारतीय दोनों खुश थे, फालतू की चिंताएं नहीं थी। सब आगे बढ़ रहे थे। और तब उस समय, उसके पीछे थे डॉ. मनमोहन सिंह। मुझे सन् 2004 की धुंधली यादें हैं जब सुषमा स्वराज ने एक बड़ा तमाशा किया था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनी तो वे अपना सिर मुंडवा कर सन्यासिन बन जाएंगीं। मुझे यह भी याद है कि किस तरह सोनिया गांधी ने विपक्ष के भारी शोर-शराबे के बीच यह सिद्ध किया था कि उनका कद उन सबसे ऊंचा है। उन्होंने साफ़ कहा कि वे प्रधानमंत्री बनना नहीं चाहतीं और यह जिम्मेदारी उन्होंने डॉ. मनमोहन सिंह को सौंपने की घोषणा भी की। इस एक्सीडेंटल प्राईम मिनिस्टर ने उसी दिन कहा था कि हम भविष्य को खुशियों से भर देंगे और यही हुआ भी। प्रधानमंत्री बतौर वे भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए। दुनिया में तब भारत पर विश्वास था। सन् 1991 में उन्होने जो बीज बोए थे उनकी फसल काटने का वक्त आ चुका था। सन् 2004 से लेकर 2014 तक प्रधानमंत्री बतौर अपने कार्यकाल में उन्होंने भारत को आधुनिकता और समृद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ाया। उसे पहले से ज्यादा शक्तिशाली बनाने में भी योगदान दिया। उनके कार्यकाल में अर्थव्यवस्था नौ प्रतिशत की गति से बढ़ी। इतना ही नहीं भारत को लंबे समय बाद अंतर्राष्ट्रीय मंच पर रुतबा हासिल हुआ। उन्होंने अमेरिका के साथ ऐतिहासिक परमाणु संधि की। आईटी सेवाओं के निर्यात के कारण देश में ढ़ेर सारे डालर आ रहे थे। 1991 के मध्य में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार करीब एक अरब डालर का था। उनके कार्यकाल की समाप्ति के समय इस भंडार में 280 अरब डालर थे और अब उसके करीब दो गुना हैं। भारत शाईन कर रहा था और भारतीयों के चेहरों पर भी चमक थी - भारत में भी और विदेश में भी। हमारे साथ कहीं दोयम दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार नहीं होता था। हमें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। देश जिस तेज गति से आगे बढ़ रहा था उसे भी दुनिया प्रशंसा की निगाह से देख रही थी। हम चीन से मुकाबिल थे और विकसित देशों के क्लब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रहे थे। आर्थिक मामलों की डॉ मनमोहन सिंह की समझ और उनकी बुद्धिमत्ता ने उन्हें पूरी दुनिया में सम्मान का पात्र बनाया था। देश में एक तरह का चैन और सुकून था। सबको पता था कि शीर्ष पर बैठा आदमी समाज को बांटने वाला नहीं है।

भारतीय संस्कृति का समेकित जयघोष है-प्रयागराज महापर्व महाकुंभ 2025

विश्व का सबसे बड़ा सनातन धर्म मेला कुंभ 2025 का आयोजन प्रयागराज उत्तर प्रदेश में 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक होने जा रहा है।

सनातनी परंपरा का यह पड़ाव बारह वर्षों की लंबी प्रतीक्षा के बाद धर्मालुओं को मिलने जा रहा है। भारतीयों को ही नहीं अपितु विदेशियों को भी अपनी भव्यता और आध्यात्मिकता के लिए कुम्भ मेला अपनी ओर खींचता है। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकले अमृत कलश की बूंदे भारत भूमि के चार शहरों यथा प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक, में गिरी थी। इसी तथ्य के आधार पर कुंभ मेले का आयोजन प्रत्येक बारह वर्षों के अंतराल में इन शहरों में होता है। धार्मिक मान्यता है कि इन शहरों की पावन धरा पर बहने वाली पवित्र नदियों (गंगा यमुना सरस्वती शिप्रा गोदावरी) में इस दौरान स्नान करके दान करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस वर्ष प्रयागराज महाकुंभ में छह दिन शाही स्नान क्रमश: 13 जनवरी पौष पूर्णिमा, 14 जनवरी मकर संक्रांति, 29 जनवरी मौनी अमावस्या, 3 फरवरी बसंत पंचमी, 12 फरवरी माघी पूर्णिमा तथा 26 फरवरी महाशिवरात्रि को होना है। शाही स्नान के लिए पंद्रह किलोमीटर लंबा घाट तैयार किया गया है। 35 पुराने और 9 नए पक्के घाट बनाए गए हैं। सभी 44 घाटों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की जाएगी। मुंबई की मरीन ड्राइव की तर्ज पर गंगा किनारे लगभग 15.25 किलोमीटर क्षेत्र में संगम से नागवासुकी मंदिर तक, सूरदास से छतनाग तक, कर्जन ब्रिज के समीप से महावीर पुरी तक 'रिवर

फ्रंट'(नदी किनारे सौन्दर्य स्थल)का निर्माण कराया गया है। प्रारंभिक आकलन के मुताबिक महाकुंभ में देश-विदेश के करीब पैंतालीस करोड़ आस्थावान आगंतुकों के शामिल होने की संभावना व्यक्त की गई है।यह एक विश्व कीर्तिमान होगा। यहां आने वाले सभी धर्मालुओं को जी पी एस युक्त डिजिटल रिस्ट बैंड देने की व्यवस्था की गई है, जिससे व्यक्ति विशेष के गुम हो जाने अथवा अन्य अप्रत्याशित घटना - दुर्घटना की स्थिति में लोकेशन की जानकारी हो सकेगी। इसके अलावा इंट्रीग्रेटेड कंट्रोल कमांड सेंटर को अपग्रेड किया गया है। इससे भीड़ प्रबंधन में सहायता मिलेगी। सी सी टी वी कैमरों को देखने के लिए बावन सीटर चार व्यूइंग सेंटर स्थापित किए गए हैं। महाकुंभ की वेबसाइट, ऐप, 11 भाषाओं में एआई चैट बॉट, बहुभाषीय डिजिटल खोया-पाया केंद्र, ड्रोन आधारित निगरानी एवं आपदा प्रबंधन,आदि की चाकचौबंद व्यवस्था की गई है। मेले की विशालता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि लगभग 4000 हेक्टेयर क्षेत्र को मेला स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जो की पूर्व के वर्षों में 3200 हेक्टेयर होता था। श्रद्धालुओं के आवास हेतु दो हजार से अधिक विशालकाय तंबुनुमा टेंट सिटी बनाए गए हैं। समस्त क्षेत्रों की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूरी तरह से पाबंदी रखी गई है। खान-पान के लिए दोना पत्तल का उपयोग सुनिश्चित किया गया है। कुंभ स्थल की सफाई हेतु दस लाख सफाई कर्मी सेवारत रहेंगे। स्वच्छता के साथ ही सुरक्षा,पार्किंग,प्रकाश और स्वास्थ्य सुविधाओं का बृहद विस्तार किया गया है। यातायात आवागमन को सुविधाजनक बनाने हेतु बड़े-बड़े खोखले कंटेनरों से पानी पर तैरता हुआ चलित सेतु पोंटून पुलों का निर्माण किया गया है। कुंभ स्थल में साठ हजार से अधिक सड़क बत्ती से पूर्णिमा सदृश्य रोशन करने की तैयारी की गई है। श्रद्धालुओं के भीतर सौंदर्य बोध और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने की दृष्टि से दीवारों पर भारतीय सभ्यता संस्कृति पर केंद्रित चित्ताकर्षक चित्रकारी, इंद्रधनुषी लाइटिंग की गई है। प्रयागराज के नैनी स्थित अरैल तट पर कुंभ की आध्यात्मिकता को और अधिक समृद्ध करने के लिए शिवालय पार्क का निर्माण भारत के मानचित्र के आकार में किया जा रहा है। लगभग 11 एकड़ में फैले पार्क में 12 ज्योतिर्लिंगों, नेपाल के शिवालय सहित देश के अन्य प्रमुख मंदिरों के प्रतिरूपों को दर्शनार्थी देख सकेंगे। पार्क की खासियत यह है कि इसका निर्माण वेस्ट मटीरियल से किया जा रहा है,जो कि पर्यावरण के अनुकूल रहेगा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को महाकुंभ में शामिल होने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आमंत्रित किया है। उनकी ओर से आमंत्रण पत्र लेकर आए उत्तर प्रदेश के मंत्री द्वय सुनील शर्मा और संजय गोंड़ 10 दिसंबर 2024 को मुख्यमंत्री से मिले और आमंत्रण पत्र, गंगाजल तथा कुंभ का प्रतीक चिन्ह उन्हें भेंट किये। इस अवसर पर सीएम साय ने कुंभ स्थल पर छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं हेतु ठहरने खान- पान प्रबंध समुचित बनाए रखने जोर दिया। विदित हो कि कुंभ जाने आने के लिए छत्तीसगढ़ से तीन स्पेशल ट्रेन की सुविधा रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदान की गई है।

विजय मिश्रा 'अमित'
वरिष्ठ लोक हिंदी रंगकर्मी
अग्रोहा कालोनी रायपुर (छग)
मो9893123310

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 04 जनवरी 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
5

आर्यिका सृष्टि भूषण मति माता जी ने कहा- जीने की कला सीख लो जंगल में मंगल हो जायेगा

आर्यिका संघ ने किया पचराई तीर्थ की ओर विहार, अशोक नगर बहुत बड़ी समाज है उसे आपका लाभ मिले : विजय धुर्रा

अशोक नगर (विश्व परिवार)। इस संसार में जीने की कला सीख लो तो जंगल में मंगल हो जायेगा सब लोग आज से ही अपने जीवन में सोच बदलो सोच बदलते जीवन में बदलाव आना शुरू हो जायेगा और कुछ ही समय में परिणाम भी सामने आयेगा यूं तो दिन दिन बढ़ती उलझनें सुलझ नहीं पाती है एक को सुलझाओ तो दूसरी उलझन सामने आ जाती है उक्त आश्य केउद्गार दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आर्यिका रत्न श्री सृष्टि भूषण मति माता जी ने व्यक्त किए।

इस दौरान मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से इस तीर्थ पर निरन्तर कार्य कर रही है नवीन संत शाला सर्व सुविधायुक्त धर्मशाला में कक्षों की श्रंखला के साथ ही इस सम्पूर्ण तीर्थ क्षेत्र को हरा भरा वनने की ओर कार्य कर रहे हैं माता जी कुछ दिन और यहां हमें समय प्रदान करें हम सब निवेदन करते हैं कि अशोक नगर की ओर विहार हो अशोक नगर में बहुत बड़ी समाज को लाभ मिलेगा इस दौरान कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा निवृत्त मान महामंत्री विपिन सिंघई निर्माण मंत्री विनोद मोदी कमेटी के उपाध्यक्ष संजीव जैन महावीर स्वीट्स मंत्री शैलेन्द्र दददा सुनील दलाल ने श्री फल भेंट कर निवेदन किया।

मध्यान्ह में आर्यिका संघ ने पचराई तीर्थ क्षेत्र की ओर विहार कर दिया माता जी को तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा बाल ब्रह्मचारी विक्की भ इया सुनील जैन महावीर धुर्रा सहित अन्य भक्तों ने भाव भीनी वदाई दी।

इस दौरान माता जी ने कहा कि माता जी ने कहा कि कहा कि क्रोध में किया गया भोजन विषाक्त हो जाता है आप सोचते हैं कि आपने रात्रि में भोजन का त्याग कर दिया है तो पुण्य मिल रहा है सच तो यह है कि ये नैतिकता है दुनिया भर के वैज्ञानिक कहते हैं कि सूर्य की उपस्थिति में भोजन किया जाता है वह बहुत जल्दी पचता है अमेरिका और फ्रांस के वैज्ञानिको ने स्पष्ट घोषणा कि है कि सोने के छः घंटे पहले भोजन करने से ही सही रस वनता है और व्यक्ति स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकता हैअंतरंग नहीं बदले। तव तक कुछ भी नहीं होने वाला बहिरंग को तो वहरूपिया भी बदल लेता है रात्रि में पक्षी भी सो जाते हैं सूर्य उदय के तीन घंटे वाद भोजन करना करने से आप स्वस्थ रहेंगे आज लोग देर सुबह तक सोते रहते हैं और देर शाम तक खाते पीते रहते हैं इसलिए आप लोगों को रोग घेर रहे हैं आपने आप को स्वस्थ रखना है तो सबसे पहले अपनी दिनचर्या को सही वनाया जाना आवश्यक है। -**विजय धुर्रा**

'मनुष्य' ही है जो 'नर' से 'नारायण' बन सकता है : मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। 'मनुष्य' ही है जो 'नर' से 'नारायण' बन सकता है प्रबल पुण्य के योग से, नर पर्याय मिली अपने पुरुषार्थ और साधना के बल पर इस अवसर का लाभ उठालो... इस पार तो तुम्हें सुख मिल गया है उस पार भी तुम्हें सुख मिल जाऐगा प्रमाद में आकर इसे भोगा तो यह काल रुपी मगरमच्छ तुम्हें हजम कर जाऐगा। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने कालानी नगर इंदौर में मंगल प्रवेश अवसर पर प्रात:कालीन धर्म सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने चार बातों के माध्यम से कहा कि मनुष्य जीवन में पुण्य, पुरुषार्थ, प्रमाद और साधना ये चार बातें मिलती है उन्होंने कहा कि जब कभी भी अच्छा अवसर मिलता है तो मन आनंद से भर जाता है आज आप लोग बहूत खुश नजर आ रहे हो उसका कारण है जिस अवसर की आपको प्रतिक्षा थी वह अवसर आज मिल ही गया उन्होंने पूंछा कि यह अवसर आपको आज ही मिला है क्या ?यदि अपनेअतीत की ओर झांककर देखोगे तो आप पाओगे कि अनेकों वार ऐसे अवसर मिले, लेकिन उन अवसरों का लाभ नहीं उठा पाऐ, मुनि श्री ने अवसर के संद्रभ में चार बातें कही अवसर पाना, अवसर खोजना, अवसर खोना, तथा अवसर का लाभ उठाना, उन्होंने कहा कि प्राय: हम अच्छे अवसर की तलाश में रहते है और वह अवसर हमें कयी वार मिलते है लेकिन प्रमादवश उन अवसरों को खो देते है।मुनि श्री ने कहा कि आज आप लोग एक कागज पैन लेकर बैठिये और अपने अतीत के अंदर झांककर देखिये कि आपके जीवन में लोक और लोकोत्तर क्षेत्र के कितने अवसर आऐ? सबसे महत्वपूर्ण अवसर तो यह मनुष्य जीवन मिला उन्होंने कहा बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथई गावा जिस मनुष्य तन को पाने के लिये देवता भी तरसते है ऐसा श्रैष्ठ मानव तन पाया और ऐसे परिवार में जन्म लिये जंहा तुम्हारे डी.एन ए. में पीड़िओं से अहिंसा के संस्कार चले आऐ है जंहा पर हिंसा और क्रूरता का कोई स्थान नहीं बोलो आप लोग सबसे अधिक भाग्यशाली हो कि नहीं ?और बजाओ अपने लिये ताली और सराहो अपने भाग्य को कि अच्छा परिवार मिला, धन संपन्नता मिली, अच्छी बुद्धि मिली, अच्छा शरीर मिला, स्वस्थ्य हो, मस्त हो, मुस्कुराते हुये बुन्देलखण्डी में कहा कि और का -का गिनायें? इत्तो सब कछु मिल गयो पर तुमने करौ का... इतनी उपलब्धी और इतनी अनुकूलताओं का लाभ उठाया तब तो जिंदगी का कुछ अर्थ है और नहीं तो सब कुछ व्यर्थ है। में मानता हुं कि घर परिवार यह सब कुछ आपको पुण्य से मिला है, धन वैभव यश कीर्ति आपने अपने पुरुषार्थ से जुटाया है, आपने परमार्थ के क्षेत्र में भी बहूत उन्नति की है और इतना भव्य भगवान का मंदिरों बनाया लेकिन ऐसे कितने लोग है जो इन पुण्यशाली अवसरों का लाभ उठा रहे है ?अक्सर प्रमाद के कारण हम इन अवसरों का लाभ भी नही उठाते और इन पुण्य के अवसरों को भी खो देते है। मुनि श्री ने कहा कि दुनियादारी की बातों में तो आपका मन जल्दी चला जाता हैऔर अच्छे कार्यों के लिये मन बनाना पड़ता है।और मन बन जाऐ तो उसको भी हम टाल देते है। उन्होंने कहा किअपनी प्राथमिकताओं को बदलो अभी तो आपका मन धंधे में लगा हुआ है मुनि श्री ने कहा कि धंधा करो, अंधा धंधा मत करो और अंधाधुंध भी मत करो। उन्होंने एक कहानी सुनाते हुये कहा कि यह नर भव किसी पारसमणि से कम नहीं है इससे आप अपने जीवन को सोना भी बना सकते हो समय पर इसका उपयोग नहीं किया तो इस पारसमणि को खो भी सकते हो, अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिये पुरुषार्थ और साधना के वल पर आगे बड़ो, तथा कर्मशील बनकर चेतना का रुपांतरण करो अपने पुण्य का भरोसा मत करना पुण्य कब क्षींण हो जाये इसका कोई ठिकाना नहीं कब किसकी लुटिया डूव जाऐगी, ठिकाना नहीं, अवसर मिलना पुण्य का योग है, अवसर खोजना पुरुषार्थ है, अवसर खोना प्रमाद है, अवसर का लाभ उठाना साधना है हमें ऐसा लक्ष्य बनाना चाहिये जिससे मानव जीवन सफल हो सके। उपरोक्त जानकारी देते हुये धर्म प्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं महामंत्री हर्ष जैन ने बताया प्रात:काल मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज मुनि श्री निर्वेगसागर महाराज मुनि श्री संधान सागर महाराज स संघ का जब कालानी नगर में मंगल प्रवेश हुआ तो सभी लोग उत्साहित नजर आये कालोनी के प्रवेश द्वार से ही श्रद्धालुओं ने बाजे गाजे के साथ मुनिसंघ की भव्य मंगल अगवानी की स्थान स्थान पर तोरण द्वार बनाये एवं रांगोली से चौक पूरा पाद प्रछालन कर मंगल आरती की।एवं धर्म सभा आयोजित की गई जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।कार्यक्रम के शुभारंभ मेंधर्म प्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक रानी डोसी, सहित कालानी नगर के प्रमुखों ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र पर दीपप्रज्वलन किया एवं आहारचर्या तथा सांयकालीन शंकासमाधान कार्यक्रम संपन्न हुआ। -**अविनाश जैन**

लाखो भक्त पहुचे भगवान आदिनाथजी के चरणो में, नांदणी की पावन धरा हुई विशुद्धमय : विचित्र बाते प्रणेता सर्वार्थसागर जी महाराज

नांदणी/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। आध्यात्म सरोवर के राजहंस, चर्या शिरोमणी, दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य विचित्र बाते प्रणेता सर्वार्थसागरजी महाराज जी ने बताया की संपूर्ण भारतभर से लाखो भक्त नांदणी पंचकल्याणक के लिये पधारे हैं। नांदणी वृषभाचल पर आकर्षक विद्युत रोषणाई, जगह जगह पर स्वागत कमान और भव्य सभा मंडप का नजारा देखने जैसा हैं।

जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी नांदणी के द्वारा न भूतो न भविष्यति नांदणी पंचकल्याण का आयोजन

जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी द्वारा न भूतो न भविष्यति नांदणी पंचकल्याण का आयोजन हुआ हैं। भगवान आदिनाथजी के दर्शन हेतु चरणो में लाखो भक्त पहुचे हैं। नांदणी की पावन धरा विशुद्धमय हुई हैं। नांदणी में गुंज रहा हैं नमोस्तु शासन जयवंत हो का नारा। आध्यात्म सरोवर के राजहंस, चर्या शिरोमणी, दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी की जयजयकार हो रही हैं। नांदणी पंचकल्याण प्रसिद्धी विभाग के श्री अभिषेक अशोक पाटील ने बताया की नांदणी पंचकल्याण में हर दिन लाखो भक्त आ रहे हैं, जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी द्वारा संपूर्ण आयोजन परिपूर्ण हुआ हैं।

पधारे हुये श्रावक श्राविकाओं को एक साथ सभी 8 आचार्य भगवन और मुनीराजों के दर्शन होने के लिये स्कुल में सभी त्यागीओं की व्यवस्था की गई हैं, जिससे नांदणी में जैन एकता का दर्शन सभी को हो रहा हैं। दक्षिण भारत और उत्तर भारत के सभी साधु एक साथ एक ही जगह पर हैं और स्कुल में सभी त्यागी व्रत्तीओं की आहार की व्यवस्था की हैं। भव्य सभामंडप, भव्य भोजनशाला, पार्किंग की सुविधा और नांदणी मठ से वृषभाचल तक जाने के लिए मोफत गाडीयों की व्यवस्था की हैं। पंचकल्याण महोत्सव के कार्याध्यक्ष श्री सागर संभूशेटे जी प्राध्यापक अप्पासाहेब भगाटे सर, नांदणी के युवा मंडळ और महिला मंडळ, चौका समिती की नांदणी की महिलाओं द्वारा सफल नियोजन हुआ हैं।

प्रतिदिन वीर सेवा दल के 300 स्वयंसेवक और पदाधिकारी पूजा महोत्सव और भोजन विभाग का उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। श्री अरविंद जी मजलेकर, श्री अजित भंडे, श्री सुभाष मगदूम, मुख्य संयोजक श्रीधर शेट्टी सहकार्यवाह मा.अभयकुमार भागाजे सर, सहसंयोजक अनिल पाटील, अरविंद भिलवडे, श्री अभय पाटील, श्री राकेश चौगुले और विविध गांव से पधारे हुये वीर सेवा दल शाखा के सदस्य सेवा योगदान दे रहे हैं। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-**अभिषेक अशोक पाटील**

जिनवाणी और धर्म के शिक्षण संस्कार से जीवन का निर्माण करें तभी इस जीवन का निर्वाण होगा : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

पारसोला (विश्व परिवार)। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज पारसोला में विराजित है।दिगंबर जैन समाज द्वारा बच्चों बड़ों के लिए धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया है जिसमें आचार्य श्री सहित संघ के मुनियों, माताजियों द्वारा धर्म उपदेश से शिक्षा दी जा रहा है। संस्कार शिविर में शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने बताया कि जैन धर्म में तीर्थंकर देवों, गणधरो केवली भगवान द्वारा प्रतिपादित धर्म देशना को आचायो ने शास्त्रों में लिपिबद्ध किया है।चार अनुयोग प्रथमनुयोग, करुणानुयोग, द्रव्यानुयोग चरणानुयोग में शास्त्रों की रचना की गई है। जयंतीलाल कोठारी, ऋषभ पचौरी, वीरेंद्र सेठ ने बताया कि आचार्य श्री ने प्रवचन में कहा कि वर्तमान में प्रथमानुयोग में महापुरुषों के जीवन चरित्र का वर्णन है। महान पुण्य से मनुष्य जन्म मिला है जन्म से मृत्यु तक अनेक भवों में अनेक पर्याय में आपने संसार परिभ्रमण किया है। मनुष्य पर्याय में धर्म और संयम प्राप्त होता है, भगवान की देशना ही धर्म है। धार्मिक शिविर के माध्यम से यह समझने का प्रयास करें कि धार्मिक शिक्षा जीवन संस्कार के लिये कितनी जरूरी है ।लौकिक शिक्षा से जीवन का निर्वाह होता है वर्तमान में लौकिक शिक्षा धन प्राप्त करने का माध्यम है। आध्यात्मिक शिक्षा का जीवन में महत्व समझना जरूरी है बच्चों से लेकर बड़ों को भी धार्मिक शिक्षण जरूरी है धार्मिक शिक्षा से जीवन की धारा बदल जाती है शास्त्रों में महापुरुषों के जीवन चरित्र अंकित हैं राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि शास्त्रों से यह ज्ञान मिलता है कि जीवन का निर्माण कैसे करना चाहिए बालकपन से शिक्षा और संस्कार से जीवन बनता है इसलिए लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी जरूरी है धर्म से हमें अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त होता है। शास्त्रों में भगवान की आराधना करने की विधि बतलाई गई है भगवान के दर्शन, अभिषेक, पूजन, स्वाध्याय पूर्ण विधि पूर्वक करना चाहिए।भगवान की पूजन अभिषेक के बिना अधूरी है। पाषाण की धातु की प्रतिमा में गुणों का आरोपण करने से वह प्रतिमा भगवान बनकर पूजनीय हो जाती है। जैन शास्त्रों के स्वाध्याय, अध्ययन, मनन चिंतन करने में ही जीवन की सार्थकता है। अंग्रेजी वर्ष जनवरी से प्रारंभ होते हैं किंतु हिंदू धर्म अनुसार चैत्र माह से वर्ष विक्रम संवत् प्रारंभ होता है, जैन धर्म अनुसार भगवान महावीर के निर्वाण से भी वीर निर्वाण वर्ष प्रारंभ होता है। धर्म से जीवन को संस्कारित कर जीवन का निर्माण करने से ही जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त होगा इसी में मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

संक्षिप्त समाचार

कवि हृदय विकर्ष शास्त्री जी द्वारा दिगंबरत्व का जयनाद संगीतमय काव्य संध्या से किया अंग्रेजी नव वर्ष का प्रारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के जाने माने विद्वान प्रसिद्ध वक्ता कवि हृदय विकर्ष जी शास्त्री जी के द्वारा उत्तरप्रदेश की धर्म नगरी जैतपुर कलां में पहली बार एक अनूठे संगीत मय काव्य अंदाज में जैनत्व और जैन संतो का गुणगान ओर प्रभु भक्ति के साथ वर्ष 2024 का समापन और 2025 वर्ष का अभिनंदन किया गया। सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालुओं ने इस काव्य संध्या का आनंद लिया साथ ही अगले दिन 1 जनवरी को मूलनायक प्रभु नेमीनाथ भगवान के महा मस्तकाभिषेक और विधान के द्वारा भक्तों ने अपने दिन की शुरुवात की गई। यह आयोजन जैतपुरकला के इतिहास में अभूतपूर्व रहा। कवि हृदय विकर्ष शास्त्री जी के इस अनूठी प्रतिभा जो जैन धर्म के गौरव गान से जन जन प्रभावित हुआ। जिसकी चर्चा पूरे नगर में होती रही। आगामी इस 2025 वर्ष में बहुत से शहरों में इस प्रकार की संगीतमय काव्य संध्या का आयोजन शास्त्री जी के द्वारा किया जाएगा।

तीर्थराज सम्मेद शिखर की पावन पवित्रता पर मंडराता खतरा: पारस जैन

सम्मेद शिखर (विश्व परिवार)। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण धरती का स्वर्ग एक बार बंदे जो कोई ताकि नरक पशुपति नहीं होई ऐसे महान तीर्थ राज

सम्मेद शिखर की बात है। तीर्थ स्थलों का कण-कण पूजनीय वंदनीय अभिनंदनीय होता है। तीर्थ स्थलों की पावन भूमि अनंतानंत जीवों के तप त्याग और साधना की रज से पवित्र होती है जिस जगह से करोड़ों जीवों ने संसार शरीर और भोगों को त्याग कर तप त्याग और साधना के मार्ग को अपनाकर संसार बंधन से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त किया ऐसे पवित्र पावन स्थल को अपवित्र करना कितने घोर पाप के बंध का कार्य हो रहा है। हर साल 14 और 15 जनवरी 2025 को लाखों की संख्या में लोग तीर्थराज पर्वत पर पर्यटन के लिए घूमने आते है इन दो दिनों के लिए संपूर्ण भारत से जो यात्री श्रद्धालुगण शिखर जी आते है उनको पर्वत पर वंदना के लिए नहीं जाने दिया जाता है। ये लोग पूरे पर्वत पर अपवित्रता फैलाते है। संपूर्ण भारत वर्ष का जैन समाज मूल दर्शक बनकर देखता रहता है। ये कैसी विडंबना है। तीर्थ स्थलों पर जन्मों जन्मों के पापो का नाश और पुण्य का संचय होता हैं। ऐसे तीर्थ स्थल पतित से पावन कंकर से शंकर नर से नारायण बनने के लिए होते है।

महापौर परिषद की बैठक में 14 प्रकरणो में से 12 प्रकरणो में सहमति प्रदान की गई

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई के महापौर परिषद की बैठक गुरूवार को एमआईसी कक्ष में आहूत की गई। जिसकी अध्यक्षता महापौर नीरज पाल, आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय एवं महापौर परिषद के सदस्यो की उपस्थिति में की गई। बैठक में प्रमुख रूप से 14 एजेण्डा पर विस्तृत चर्चा की गई। 1 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं 5 सहायिकाओं की नियुक्ति हेतु महापौर परिषद से अनुमोदन किया गया। निगम के वाहन शाखा हेतु उच्च कुशल, कुशल, अर्द्धकुशल वाहन चालक एवं हेल्फर उपलब्ध कराने का कार्य चर्चा के बाद पारित किया गया। राज्य प्रवर्तित योजना अंतर्गत वर्ष 2020-21 से 2021-22 तक निविदा उपरांत एसओआर से कम के कारण बचत राशि से कार्य कराये जाने की अनुसंशा प्रदान की गई है। इस कार्य हेतु संबंधित अभियंता की तारिफ की गई।

इसी तारतम्य में तुम्हर शहर तुम्हर शिवनाथ विस्तार योजना के मध्य स्थित भूमि के आबंटन कार्य को सलाहकार समिति की बैठक में चर्चा के उपरांत आगामी महापौर परिषद की बैठक में पुन: प्रस्तुत करने को कहा।

महापौर नगर पालिक निगम भिलाई एवं आयुक्त नगर पालिक निगम भिलाई हेतु आवास की आवश्यकता को देखते हुए सर्व सम्मति से पारित किया गया। साथ में यह भी चर्चा की गई एक विश्रामगृह निर्माण की भी आवश्यकता है। नगर पालिक निगम भिलाई के संपत्ति की सुरक्षा हेतु सुरक्षागार्ड की सेवांए जारी करने के लिए प्रस्तुत संक्षेपिका के अनुसार सहमति प्रदान की गई। नगर पालिक निगम कार्यालय के स्थान पर चन्द्रा मौर्या अण्डर ब्रिज के पास आंन ग्रिड सोलर प्लांट स्थापना से स्थल पर लगे हुए मोटर में विद्युत प्रवाह की निरंतरता बनी रहे इस हेतु सहमति प्रदान की गई। इससे निगम का विद्युत व्यय का भी बचत होगा।

जिम्मेदारी के तहत नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्रांतर्गत स्थित रामनगर मुक्तिधाम का उन्नयन विकास कार्य एवं रखरखाव कार्य को सलाहकार समिति की बैठक की अनुसंशा के पश्चात पुन: महापौर परिषद में रखे जाने की सहमति बनाई गई है। मिशन अमृत 2.0 अंतर्गत सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट निर्माण कार्य में चर्चा कर पारित किया गया। तालाब की जलकुम्भी सफाई हेतु वीड हारवेस्टर मशीन क्रय किये जाने की आवश्यकता को देखते हुए सर्व सम्मति से पारित किया गया है। नगर पालिक निगम भिलाई जोन कार्यालय जोन क्रं. 03 एवं

जे.पी. सीमेंट को 7 करोड़ 82 लाख संपत्तिकर जमा नहीं करने पर कुर्की वारंट जारी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। जे.पी.सीमेंट लिमिटेड सेक्टर 04 द्वारा संपत्तिकर की बकाया राशि 7 करोड़ 82 लाख नहीं जमा करने के कारण नगर पालिक निगम भिलाई के आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा छत्तीसगढ़ नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 174 की उपधारा 1 के अधीन मांग पत्र जारी किया गया था। जिसमें 30 दिनो के भीतर संपत्तिकर जमा करना था। संबंधित संस्था द्वारा समय अवधि में संपत्तिकर नहीं जमा करने के कारण अधिनियम की धारा 175 के अंतर्गत पुन: नोटिस दिया गया। प्रबंधक जे.पी.सीमेट लिमिटेड सेक्टर 04 भिलाई के चल संपत्ति को अधिग्रहण करते हुए कुर्की वारंट धारा 178 के अधीन जारी किया गया।

उक्त अधिनियम की धारा 177 के अधीन रहते हुए वारंट में निर्दिष्ट अधिग्रहण करने की दृष्टि से सूर्यादय एवं सूर्यास्त के बीच किसी भी समय भवन के बाहरी या भीतरी दरवाजे या खिड़खी को तोड़कर जोन के सहायक राजस्व अधिकारी अनिल मेश्राम को अधिकृत किया गया। अंतिम चेतावनी जे.पी.सीमेंट को दिया गया है कि 14.01.2025 के पूर्व निगम की संपत्तिकर की बकाया राशि जमा कर देवें। अन्यथा नियमानुसार कुर्की की कार्यवाही की जावेगी। कुर्की वारंट के लिए प्रहलाद लहरे, दुर्योधन साहू, गणित बद्येल, भूषण सागर आदि पहुंचकर तामिल करवाने का कार्य किये। सनद रहे कि नगर निगम भिलाई क्षेत्र में जो भी व्यक्ति संपत्तिकर एवं अन्य कर नियमानुसार जमा नहीं कर रहे है। उन्हे नोटिस दी जा रही है, जिससे समय अवधि में अपना संपत्तिकर या अन्य कर जमा कर दें। निर्धारित समय देने के पश्चात देय राशि नहीं जमा करने वालो पर कुर्की की कार्यवाही की जावेगी। जिसकी पूरा जिम्मेदारी संबंधित करदाता की होगी। आयुक्त द्वारा सभी को समय अवधि में निगम की देय राशि जमा करने का अनुरोध किया गया है।

प्राचार्य मिशन 40 डेज की गतिविधियों का विद्यालयों में शत्-प्रतिशत करें क्रियान्वयन -कलेक्टर व्यास

यशस्वी जशपुर कार्यक्रम के तहत् प्राचार्यो, बीईओ और एबीईओ की हुई समीक्षा बैठक

सीईओ जिला पंचायत अभिषेक कुमार और डिप्टी कलेक्टर प्रशांत कुशवाहा रहे उपस्थित

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। यशस्वी जशपुर कार्यक्रम के तहत् कलेक्टर रोहित व्यास ने शुक्रवार को जिला पंचायत के सभाकक्ष में जिले के प्राचार्यो, बीईओ और एबीईओ की समीक्षा बैठक ली। सीईओ जिला पंचायत अभिषेक कुमार और डिप्टी कलेक्टर प्रशांत कुशवाहा भी समीक्षा बैठक में उपस्थित रहे।

कलेक्टर रोहित व्यास ने कक्षा 10वीं एवं 12वीं के छमाही परीक्षा परिणाम की समीक्षा की। शिक्षक विद्यार्थियों के रोल मॉडल होते हैं इसलिए उसके अनुरूप ही विद्यालय में शिक्षक का व्यवहार होना चाहिए। आगामी बोर्ड परीक्षा के दृष्टिगत मिशन 40 डेज की गतिविधियों को निर्धारित समय पर पूर्ण करने के साथ प्रत्येक दिन उसका फीडबैक गूगल लिंक के माध्यम से देने का निर्देश उन्होंने दिया। इस सीईओ अभिषेक कुमार ने गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया? और साथ ही विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने और परीक्षा परिणाम बेहतर करने के प्रयासों की जानकारी ली।

शिक्षा विभाग के प्रभारी अधिकारी डिप्टी कलेक्टर प्रशांत कुशवाहा ने मिशन 40 डेज के प्रतिदिन के वीडियो क्लिपिंग शेयर करने का निर्देश विकासखंड शिक्षा अधिकारियों को दिया।

जिला शिक्षा अधिकारी पीके भटनागर ने बोर्ड परीक्षा की तैयारी के साथ अन्य विभागीय कार्यों की जानकारी भी ली। इस अवसर पर यशस्वी जशपुर के सदस्य संजीव शर्मा, अवनीश पांडेय उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

अधिक किराया वसूल कर यात्री से की मारपीट

कांकेर(विश्व परिवार)। मामले का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि दिनांक 01.01.2025 आवेदक राकेश जसनानी अपने माता पिता को रायपुर से कांकेर आने के लिये रायपुर में नरेश बस में बैठे और कांकेर के लिये टिकट कटाये कांकेर तक का किराया 220 रूपये था लेकिन आवेदक के माता पिता से कंडक्टर और ड्रायवर ने 250 रूपये जोर जबरदस्ती से लिया और कांकेर पहुंचा तो अपने माता पिता को लेने गया कंडक्टर और ड्रायवर से बोला कि तुम बढ़ा कर किराया क्यों लिये हो तो उक्त दोनो ने अनावेदक के साथ बहसबाजी और लड़ाई झगड़ा करने की रिपोर्ट जांच दौरान आवेदक, अनावेदक से पूछताछ कर रहा था कि अनावेदक मुकेश कुमार उपाध्याय, शैलेन्द्र अग्निहोत्री हो हल्ला करते हमारे खिलाफ शिकायत करते हो करके उत्तेजित होकर गाली गलौच कर रहे थे। जिसे पुलिस द्वारा समझाने पर भी नही समझ रहा थे अनावेदक कभी भी संज्ञेय अपराध घटित कर शांति भंग कर सकता है। संज्ञेय अपराध घटित करने की अंदेशा पर मौके पर गिरफ्तार किया गया।

पीएम आवास ग्रामीण की समीक्षा बैठक सम्पन्न

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू एवं परियोजना निदेशक हरिशंकर चौहान की उपस्थिति में कलेक्टर कार्यालय के सभा कक्ष में पीएम आवास ग्रामीण की समीक्षा बैठक आयोजित की गई जिसमें सभी ब्लॉक के सीईओ एवं पंचायत के सभी अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। कलेक्टर ने इस अवसर पर सभी ब्लॉक के पीएम आवास की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि वित्तीय वर्ष के अंत तक सभी कार्य को पूरा करने की कोशिश करें। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों को आवास प्रदान करना है। यह योजना केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही है। योजना के लाभार्थियों का चयन सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (एसईसीसी) के आधार पर किया जाता है। योजना के तहत, लाभार्थियों को अपने घरों का निर्माण करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं। अब तक लाखों लाभार्थियों को आवास प्रदान किए जा चुके हैं।

राजस्व प्रकरणों के निराकरण में लायें तेजी- कलेक्टर ध्रुव

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने राजस्व विभाग में लंबित राजस्व प्रकरणों की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अविवादित नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, राजस्व अभिलेखों में सुधार, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र, वनाधिकार प्रमाण पत्र के कार्यों में तेजी लाने की आवश्यकता है। हितग्राही मूलक कार्यों जैसे धान खरीदी, पीडीएस, स्वामित्व योजना, नक्शा बटांकन, आधार सीडिंग के कार्यों को पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ पूरा करें। निर्वाचन संबंधी कार्यों में को प्राथमिकता के साथ पूर्ण करें। नियद नेल्लानार एरिया में आमजनों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होनी चाहिए। सभी अधिकारी शासन की कल्याणकारी योजनाओं का बेहतर प्रचार प्रसार करना सुनिश्चित करें जिससे योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके। उन्होंने सभी अधिकारियों को आश्रम छात्रावास के नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए।

20 लीटर अवैध शराब के साथ आरोपी को किया गिरफ्तार

गरियाबंद(विश्व परिवार)। नया सवेरा अभियान अंतर्गत वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश में समस्त थाना प्रभारी अपनेये-अपने थाना क्षेत्र अंतर्गत गांजा,शराब,जुआ सट्टा पर कार्यवाही करने हेतु निर्देश दिए थे।जिसके परिपालन मे 1 जनवरी को थाना प्रभारी फिंगेश्वर निरीक्षक पवन वर्मा को मुखबिर से सूचना मिल की ग्राम कुण्डेल के श्मशान घाट मे एक व्यक्ति अवैध रूप से देसी महुआ कच्ची शराब लोगो को बेच कर अवैध धन लाभ अर्जित कर रहा है।जिसकी सूचना तस्दीक पर थाना फिंगेश्वर से पुलिस टीम द्वारा घटना स्थल पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और रेड की कार्यवाही करते हुए आरोपी को मौके पर पकड कर नाम पता पुछने पर अपना नाम शलेश्वर सतनामी 24 वर्ष निवासी तरीघाट होना बताया।आरोपी के कब्जे से 4000 हजार रुपए के 20 लीटर अवैध कच्ची महुआ शराब बरामद की गई।आरोपी का उक्त कृत्य अपराध का पाए जानें से आरोपी के विरूद्ध 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।विवेचना दौरान आरोपी के विरूद्ध पर्याप्त सबुत पाये जाने से विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

चार दिवसीय 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ

हजारों श्रद्धालुओं ने धार्मिक उल्लास के साथ दिव्य कलश यात्रा में शामिल हुए

गायत्री महामंत्र एव सामूहिक शंखनाद और राष्ट्रीय गीत अरपा पैरी के धार के सु मधुर गायन से कलश शोभा यात्रा की शुरुआत

गरियाबंद (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ की पवित्र भूमि गरियाबंद के प्राण स्वरूप जिला मुख्यालय के हृदय स्थल गांधी मैदान में शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में शुक्रवार को चार दिवसीय 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हजारों श्रद्धालुओं ने भी विशालकाय भव्य और दिव्य कलश यात्रा के साथ किया गया। इस दौरान गरियाबंद जिले के अलावा अन्य जिलों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने भी कलश यात्रा में भाग लिया और धार्मिक उल्लास के साथ यात्रा में शामिल हुए।

गायत्री महामंत्र और सामूहिक शंखनाद और राष्ट्रीय गीत अरपा पैरी के धार के सु मधुर गायन से कलश शोभा यात्रा की शुरुआत मां गायत्री, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, और माता भगवती देवी के चित्र के समक्ष शांतिकुंज हरिद्वार से आए विद्वान आचार्यों ने मंगल व ध्वज गीतों के बीच कलश यात्रा का शुभारंभ किया गया। माथे पर कलश लिए पीतवस्त्रधारियों से पूरा शहर पट गया। मंगल गीतों व गगनभेदी जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो उठा।

कलश यात्रा में कई भजन कीर्तन मंडली रही, जो देवी भजनों से लगातार लोगों को मनमोहित करती रही , साथ ही भगवान शिव की जीवन्त- झांकी सबको सेल्फी लेने मजबूर कर रहा था । दूसरी पंक्ति में कार्यक्रम के आयोजक और हजारों महिलाओं का समूह रहा। ये महिलाएं अपनी

संस्कृति में खुशी के साथ ध्वज पताका लिए मां गायत्री की जय-जयकार के नारों के साथ शहर की

सड़कों पर निकले। इस पूरी यात्रा में गरियाबंद शहर के सभी समाजों ने स्वागत में फूल बरसाए।

लगभग 1008 कलश की यह यात्रा यज्ञ स्थल से संतोषी मंदिर होते हुए शारदा चौक , गौरव पथ , भूतेश्वर चौक से मुख्य मार्ग होते हुए तिरंगा चौक से छीन तालाब पहुंची , वहां वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कलश देवता का पूजन किया गया और जलपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसके बाद यात्रा सुभाष चौक , शीतला मंदिर , दुर्गा मंदिर होकर गायत्री मंदिर होते हुए पुन: गायत्री गांधी मैदान पहुंची, जहां कलश देवता की महा आरती कर स्वागत वंदन किया गया ।

गरियाबंद के गांधी मैदान में मुख्य मंच पर शांतिकुंज हरिद्वार से आए ऋषिपुत्रो द्वारा गायत्री महायज्ञ का उद्देश्य बताते हुए बताया गया कि गायत्री परिवार द्वारा एक से चार जनवरी तक आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ राष्ट्र को सक्षम, समर्थ, और समृद्ध बनाने का एक महान आध्यात्मिक प्रयोग है। उन्होंने कहा कि ऋमनुष्य एक भटका हुआ देवता है, यदि वह सही दिशा में चल पड़े तो उससे बढ़कर कोई श्रेष्ठ नहीं , गायत्री महायज्ञ मानव को सही दिशा में चलाने का उपाय है।

गरियाबंद वासियों के लिए नए वर्ष की सुबह बेहद खास रही। गायत्री शक्तिपीठ गरियाबंद द्वारा आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के लिए शहर में 1008 भव्य मंगल कलश यात्रा निकाली गई। माथे पर कलश लिए पीतवस्त्रधारियों से पूरा शहर पट गया। मंगल गीतों व गगनभेदी जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। यात्रा में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। गरियाबंद में जगह-जगह अलग अलग संगठन के लोगों ने पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत किया गया। नगर पालिका अध्यक्ष एवं उनके पार्षदों द्वारा भी जल कलश यात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया , जल कलश यात्रा गांधी मैदान से दोपहर 1 बजे शुरू होकर शाम 5 बजे तक समाप्त हुआ । यज्ञ स्थल के पास सप्त ऋषियों की प्रतिमा के साथ , श्री राम जी , श्री राधा कृष्ण जी की जीवन्त प्रतिमा विराजमान है ,

सफेद संग मरमर पत्थर में सजल श्रद्धा और प्रखर प्रज्ञा- स्थापित है जो युगतीर्थ-गायत्री तीर्थ के मूल घटक हैं । युगतीर्थ के संस्थापक वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि, पण्डित आचार्य श्रीराम शर्मा एवं स्नेह सलिला वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा की वास्तविक पहचान उनके शरीर से नहीं, उनके द्वारा प्रवाहित प्रखर प्रज्ञा एवं सजल श्रद्धा की सशक्त धाराएँ रही हैं । यज्ञ स्थल के समीप ही चार दिवस तक चलने वाली प्रदर्शनी भी बनकर तैयार हो चुकी है। शांतिकुंज हरिद्वार से पुस्तक प्रदर्शनी, यज्ञ का ज्ञान विज्ञान प्रदर्शनी, साहित्य बिक्री स्टॉल लगा हुआ है। पिछले कई दिनों से तैयारी चल रही यज्ञशाला अपने पूर्ण स्वरूप में तैयार हो गई। संपूर्ण कार्यक्रम पूर्व सांसद ,जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष सरला को , फिंगेश्वर जनपद अध्यक्ष , गायत्री परिवार गरियाबंद के जिला समन्वयक टीकम चंद साहू , गायत्री परिवार के जिला संगठन प्रभारी रोमन चंद्राकर , मुख्य प्रबंध ट्रस्टी के अलावा हजारों लोग शामिल रहे।

कांकेर व गोविंदपुर वार्षिक मेला के सफल आयोजन को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न

कांकेर(विश्व परिवार)। क्षेत्र के विख्यात कांकेर एवं गोविंदपुर वार्षिक मेला के आयोजन के संबंध में अपर कलेक्टर श्री जितेन्द्र कुर्रे की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में मेला के दौरान कानून व्यवस्था, यातायात, विद्युत, पानी, पार्किंग, साफ-सफाई एवं स्वास्थ्य सहित मेला स्थलों में नागरिकों की सहायता के लिए नियंत्रण कक्ष तथा स्वास्थ्य परीक्षण जांच कक्ष स्थापित करने पर चर्चा हुई। पुलिस विभाग को मेला स्थल में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटी लगाने तथा यातायात व्यवस्था के लिए रूट चार्ट बनाने के निर्देश दिए गए। बैठक में बताया गया कि कांकेर एवं गोविंदपुर मेला स्थल में संपूर्ण अवधि के लिए कानून एवं शांति व्यवस्था हेतु एसडीएम कांकेर द्वारा मजिस्ट्रियल ड्यूटी लगाई जाएगी। इसी तरह मेला के दौरान विद्युत व्यवस्था के निर्विघ्न एवं सुचारू रूप

से आपूर्ति के लिए विद्युत विभाग को, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा दोनों मेला स्थल में कैम्प लगाकर पर्याप्त चिकित्सकों के दल आवश्यक दवाईयों के साथ उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा बैठक में फायर बिग्रेड एवं शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, खाद्य सामग्रियों की जांच, देव स्थलों के आसपास सफाई करने तथा पूजा व्यवस्था, मेला भाठा की साफ-सफाई, दुकान आबंटन, शौचालय, यातायात एवं पार्किंग व्यवस्था, ध्वनि प्रदूषण पर कार्यवाही सहित अन्य व्यवस्थाओं के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

सांई झूले लाल की बरकत का खजाना वितरित किया और समाज ने निकली शोभायात्रा

जगदलपुर(विश्व परिवार)। सिन्धी समाज अपने हर त्योहार की शुरुआत अपने समाज के इष्टदेव साईं झूलेलाल की अराधना स्तुति से ही करते हैं। सिंधु संस्कृति को याद करते हुए उसे संरक्षित रखने के उद्देश्य से ही समूचे विश्वास में फैले सिन्धी समाज ने 1 जनवरी को विश्व बहराणा दिवस मना रहे हैं। श्री गुरु संगत गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष सुंदर भोजवानी एवं भारतीय सिंधु सभा अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी ने जानकारी दी। सिन्धी समाज की भावी पीढ़ी को सिन्धी भाषा, बोली, संस्कृति, सभ्यता का ज्ञान प्राप्त हो इसी मकसद से यह विश्व सिंधु बहराणा साहिब दिवस का आयोजन गत वर्ष से शुरू किया गया हैं। बहराणा साहिब बनाने की जिम्मेदारी संजय नत्थानी, जीतू नागरानी ने निभाई, संतोष बसरानी, भिखम दुल्हानी, दीपक नवतानी ने शोभायात्रा रथ को भव्य बनाया। विश्व बहराणा दिवस के विशेष अवसर पर साईं झूलेलाल जी का बरकत का खजाना वितरित किया गया। श्री गुरु संगत गुरुद्वारा कमेटी के कोषाध्यक्ष शंकर नानकानी ने बताया एक जनवरी को चंद्र दिवस रहा। इस वजह से सिन्धी गुरु संगत गुरुद्वारे में सुखमनी पाठ साहिब दीपा नवतानी जी द्वारा किया गया, जहां सिन्धी समाज सदस्यों ने रुमाल भी चढ़ाया। विश्व सिंधु बहराणा साहिब दिवस की शोभायात्रा में छेज डांडिया नृत्य किया गया। विश्व बहराणा साहिब की शोभायात्रा सिन्धी गुरुद्वारा से निकल कर झूलेलाल मार्ग होते हुवे मैन रोड, गोल बाजार, सिरहासार चौक, बलिराम कश्यप चौक से महादेव घाट पहुंची, महादेव घाट पर सिन्धी समाज की पूजन प्रभारी चंद्रा देवी नवतानी द्वारा साईं झूलेलाल जी की आरती, अक्खो, अरदास, पल्लव करने के पश्चात ज्योत व बहराणा साहिब का विसर्जन गुलशन माधवानी ने किया गया।

गरियाबंद के रसायन व्याख्याताओं का सेवाकालीन प्रशिक्षण संपन्न

गरियाबंद (विश्व परिवार)। सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के अंतर्गत गरियाबंद जिले के रसायन शास्त्र व्याख्याताओं का तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण संपन्न हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी ए के सारस्वत के निर्देशन व प्रशिक्षण नोडल एडीपीओ बुद्ध विलास सिंह सहायक नोडल एपीसी विल्सन थॉमस के मार्गदर्शन में विषयवार सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण संपन्न हुआ जिसमें विषय विशेषज्ञ मास्टर ट्रेनर व्याख्याता समीक्षा गायकवाड़ एवं व्याख्याता राजेश कंसारी द्वारा जिले के रसायन शास्त्र व्याख्याताओं को प्रशिक्षण दिया गया। आवासीय प्रशिक्षण का संचालन कार्यक्रम प्रभारी बीआरसीसी तेजेश शर्मा की देखरेख में बीआरसीसी भवन गरियाबंद में हुआ। प्रशिक्षण का

संचालन दो चरणों में हुआ। प्रथम चरण में आनलाइन प्रशिक्षण 13 दिसंबर से 17 दिसंबर तक संचालित हुआ एवं दूसरे चरण का आवासीय प्रशिक्षण 30 दिसंबर से 1 जनवरी तक तीन दिवस में संपन्न हुआ। डीआरजी समीक्षा गायकवाड़ ने बताया कि प्रशिक्षण में नई शिक्षा नीति 2020 आधारित कक्षा 9वीं से 12वीं विषयपरक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, सीखने के प्रतिफल, रासायनिक अभिक्रियाओं के सरल प्रदर्शन, गतिविधि आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक शिक्षण, कर के सीखना, खेल आधारित केमिकल पजल, ढ्ढष्टञ्ज का अनुप्रयोग, माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की समझ, सतत् विकास लक्ष्य, विद्युत रसायन, रासायनिक अवधारणाओं को दैनिक जीवन से जोड़ना, पाठ्यक्रम आधारित प्रायोगिक कार्य,रासायनिक बलगतिकी, फिजिकल केमेस्ट्री, कार्बनिक रसायन की कठिन अवधारणाओं को प्रायोगिक तौर पर शिक्षकों द्वारा गतिविधि करवाकर स्पष्ट कराने का प्रयास किया गया। प्रशिक्षु व्याख्याताओं की शंकाओं के समाधान, रसायन विज्ञान के प्रति रूचि बढ़ाने, नवाचारी प्रयोगों, 21वीं सदी के कौशल, कक्षा शिक्षण की तैयारी व अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श हुआ। प्रशिक्षणार्थी व्याख्याताओं के प्री टेस्ट व पोस्ट टेस्ट लिए गए। प्रशिक्षण के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी ए के सारस्वत, डीएमसी के नायक और डाइट रायपुर प्राचार्य बी एल देवांगन और उनकी टीम द्वारा निरीक्षण किया गया और फीडबैक लिया गया।

उक्त प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर उप संचालक अजित सिंग जाट शिक्षा संचनालय रायपुर, जिला नोडल अधिकारी श्याम चंद्राकर, एपीसी मनोज केला प्रशिक्षण स्थल पर पहूंच कर प्रशिक्षु व्याख्याताओं से रूबरू हुए और शिक्षकीय कार्यों में आने वाली समस्याओं उनके समाधान, बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी, प्रश्न बैंक की उपयोगिता और अन्य मुद्दों पर चर्चा परिचर्चा की।

संगठन प्रमुखों ने ही संगठन को किया तार तार

गरियाबंद जिला भाजपा संगठन मंडल चुनाव में अयोग्य को बनाया कोपरा भाजपा मंडल अध्यक्ष

गरियाबंद संगठन चुनाव प्रभारी एवम चुनाव परिवेक्षक बने मुकदर्शक

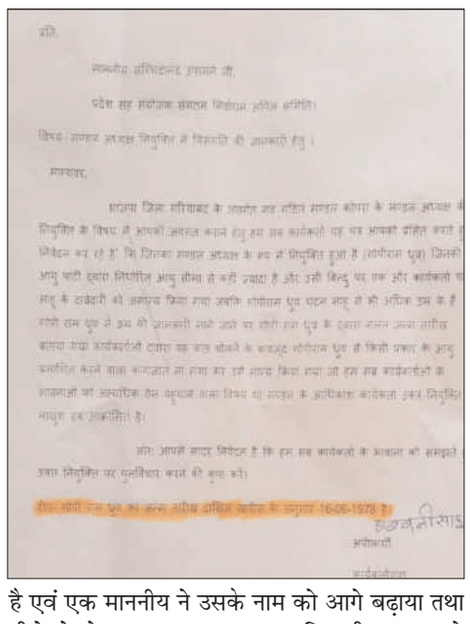

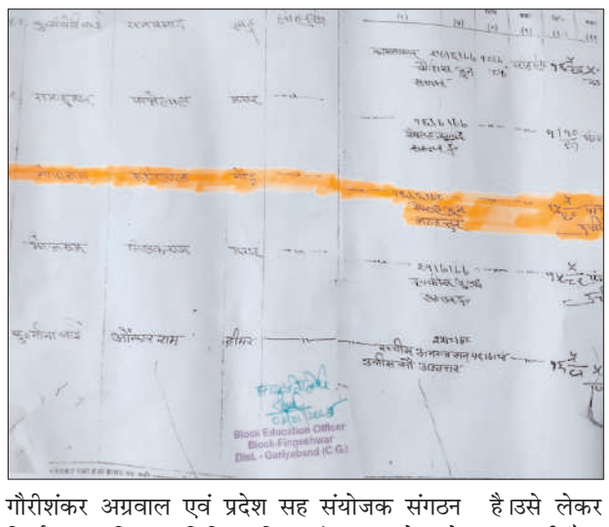

गरियाबंद (विश्व परिवार)। नवगठित भाजपा मंडल कोपरा अध्यक्ष नवगठित भाजपा मंडल कोपरा अध्यक्ष पद के लिए जिला संगठन चुनाव के समय राय सुमारी के लिए पैनल में पांच दावेदारो का नाम था। जिसमें कोपरा मंडल अध्यक्ष के लिए राजिम के एक पूर्व माननीय के ईच्छा के चलते कोपरा मंडल में आयोग्य व्यक्ति को मंडल अध्यक्ष घोषित करवाने में सफल हो गया। जबकि प्रदेश संगठन ने मंडल अध्यक्ष चुनाव के लिए निर्धारित 35 से 45 वर्ष आयु सीमा तय किया गया है।जिसके चलते एक कार्यकर्ता को अमान्य करते हुए उसके नाम को पैनल से बाहर किया। कोपरा मंडल अध्यक्ष का घोषणा चुनाव अधिकारी के द्वारा कोपरा के रामजानकी मन्दिर मे किया गया।वही कोपरा मंडल अध्यक्ष गोपी ध्रुव का उम्र 45 वर्ष से अधिक है स्कूल के दाखिला दस्तावेज में उसकी उम्र 16 जून 1978 दर्ज है। दावेदारी के समय उम्र का जानकारी नही दिया गया

है एवं एक माननीय ने उसके नाम को आगे बढ़ाया तथा नीचे से लेकर ऊपर तक चुनाव अधिकारी पर दबाओ बनाया था। गोपी ध्रुव के नाम पर घोषणा होने से कार्यकर्ताओं में नराजगी देखी जा रही है । भाजपा कार्यकर्ताओं ने इसकी शिकायत प्रदेश संयोजक संगठन निर्वाचन अपिल समिति पूर्व विधानसभा अध्यक्ष

गौरीशंकर अग्रवाल एवं प्रदेश सह संयोजक संगठन निर्वाचन अपिल समिति सच्चिदानंद उपासने को लिखित शिकायत प्रदेश कार्यालय किया गया।वही गरियाबंद जिले में मंडल चुनाव को लेकर कार्यकर्ताओं में गरमा गहमी का माहौल देखा गया ।जिला संगठन चुनाव प्रभारी श्रीचंद सुंदरानी एवं प्रवेक्षक राम जी भारती के द्वारा बिना उम्र जांच किए बगैर ही कोपरा मंडल अध्यक्ष गोपी ध्रुव को घोषित किया गया जिनके आयु सीमा अधिक है ।वही खड़मा मंडल अध्यक्ष पद के लिए एक महीला नेत्री ने मजबूत दावेदारी पेश कि थी जिसे संगठन प्रमुखो ने उसकी उम्र सीमा तीन माह अधिक बताकर आयोग्य घोषित किया गया वहीं 35 वर्ष से कम युवा पंकज निर्मलकर को अध्यक्ष घोषित किया गया था उसके बाद कार्यकर्ताओं के विरोध के चलते कहा के चुनाव को टाला गया वही मैनपुर मंडल अध्यक्ष पद के लिए एक महीला नेत्री ने भी दावेदारी मजबूत किया था उसे भी उम्र कम होना बताकर दावेदारी से पीछे किया गया वही गरियाबंद मंडल अध्यक्ष पद में भी एक नया युवक को मंडल अध्यक्ष घोषित किया गया है।उसे लेकर भी पाण्डुका क्षेत्र के कार्यकर्ताओं में नाराजगी है वहीं फिंगेश्वर मंडल अध्यक्ष पद एक महीला का नाम घोषित होने के बाद कुछ कार्यकर्ताओं के द्वारा पूर्व मंडल अध्यक्ष के साथ झूमा झटकी करने लग गया था यह एक अशोभनी घटना थी जिस प्रकार से गरियाबंद जिला में संगठन प्रमुखो के द्वारा चुनाव संपन्न कराए हैं उसमें कई सवाल खड़े हो रहे है कार्यकर्ताओं के द्वारा प्रदेश में शिकायत किया गया है अब शिकायत के निराकरण होने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी ।

यदि रोहित संन्यास लेते हैं तो मुझे हैरानी नहीं होगी : पूर्व कोच रवि शास्त्री

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने कहा कि अगर कप्तान रोहित शर्मा टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लेते हैं तो उन्हें आश्चर्य नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अगर रोहित का आखिरी मैच अच्छा रहता है तो उन्हें इस प्रारूप से खुशी-खुशी विदायी ले लेनी चाहिए। सिडनी में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के अंतिम टेस्ट की पूर्व संध्या पर रोहित के भविष्य को लेकर अटकलें तेज हो गईं, जहां मुख्य कोच गौतम गंभीर ने मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पहले दिन के खेल से पहले पिच को देखने के बाद प्लेइंग इलेवन का फैसला किया जाएगा, हालांकि उन्होंने यह नहीं कहा कि शुक्रवार से शुरू होने वाले मैच में भारतीय कप्तान का खेलना तय है या नहीं। मौजूदा सीरीज में रोहित ने तीन मैचों में 6.2 की औसत से सिर्फ 31 रन बनाए हैं। उन्होंने कहा, वह अपने करियर को लेकर फैसला करेंगे लेकिन मुझे बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होगा (अगर शर्मा संन्यास लेते हैं) क्योंकि उनकी उम्र कम नहीं हो रही है। विंग्स में अन्य युवा खिलाड़ी भी हैं, शुभमन गिल, जो वर्ष 2024 में 40 से अधिक औसत वाले अपने स्तर के खिलाड़ी हैं और खेल नहीं रहे हैं। यह आपके दिमाग को चकरा देता है कि वह बेंच पर बैठकर क्या कर रहा है। इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होगा, लेकिन यह उसका फैसला है। दिन के अंत में, यदि भारत विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (फाइनल) के लिए क्वालीफाई कर लेता है या यदि वे अभी भी फाइनल के लिए क्वालीफाई करते, तो यह पूरी तरह से एक और बात है। अन्यथा, मुझे लगता है कि यह सिर्फ सही समय हो सकता है - लेकिन (यदि शर्मा खेलते हैं) तो उन्हें शानदार प्रदर्शन करना चाहिए। यदि मैं रोहित शर्मा के आसपास होता, तो मैं उनसे कहता, 'बस जाओ और धमाका करो। बस मैदान पर जाओ और धमाका करो'। शास्त्री ने आईसीसी रिव्यू शो में कहा, ठीक वैसे ही जैसे जब आप इस समय जिस तरह से खेलने की कोशिश कर रहे होते हैं, वह अच्छा नहीं लगता। मैदान पर जाओ और विपक्ष पर हमला करो और फिर देखते हैं क्या होता है। उन्हें यह भी लगता है कि रोहित का रेड-बॉल फॉर्म पिछले कुछ महीनों में अपने स्वाभाविक खेल को नहीं खेलने के कारण गिर गया है, और उन्होंने उनकी स्थिति की तुलना ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा के संघर्ष से की। मुझे लगता है कि जब मैं बाहर से देखता हूं, तो मुझे लगता है कि वह गेंद पर थोड़ा देर से आता है। उसके पैर सामान्य रूप से उतने अच्छे से नहीं चलते हैं। अपने चरम पर भी, उसका फुटवर्क न्यूनतम था, लेकिन और भी बहुत कुछ था। वह गेंद की ओर अधिक था। इस समय, मुझे लगता है कि वह क्रीज पर पकड़ा हुआ है। यह ऑस्ट्रेलियाई टीम में (उस्मान) ख्वाजा की तरह है, जहां आप न तो आगे होते हैं और न ही पीछे। और मुझे लगता है कि जब रोहित गेंद की ओर अधिक आगे बढ़ता है और विरोधी टीम से भिड़ने का इरादा रखता है, तो उस समय दिमाग से पैरों तक सही संकेत जाते हैं कि उन्हें क्या करना है।

व्यापार समाचार

भारत का कोयला उत्पादन दिसंबर 2024 में बढ़कर 97 .94 मिलियन टन , 5 .3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज

नई दिल्ली(एजेंसी)। कोयला मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, भारत का कुल कोयला उत्पादन दिसंबर 2024 के दौरान 5.33 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज करते हुए 97.94 मिलियन टन (एमटी) पर पहुंच गया, जबकि पिछले साल इसी महीने यह 92.98 एमटी था। कैप्टिव और दूसरी खदानों ने 18.95 एमटी उत्पादन किया, जो पिछले साल की इसी अवधि में 14.62 एमटी की तुलना में 29.61 प्रतिशत की शानदार वृद्धि को दर्शाता है। बयान में कहा गया है कि 24 दिसंबर तक क्यूमलेटिव कोयला उत्पादन में भी शानदार वृद्धि देखी गई, जो वित्त वर्ष 2024-25 में 726.29 एमटी तक पहुंच गया, जबकि यह वित्त वर्ष 2023-24 की इसी अवधि के दौरान 684.45 एमटी था, जो 6.11 की वृद्धि दर्शाता है। कोयला डिस्पैच के मामले में, 24 दिसंबर के आंकड़े बढ़कर 92.59 मीट्रिक टन हो गए, जबकि दिसंबर 2023 में यह 87.06 मीट्रिक टन था, जो 6.36 प्रतिशत की वृद्धि दर है। कैप्टिव और दूसरे खदानों से डिस्पैच 18.13 मीट्रिक टन रहा, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 31.83 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, दिसंबर 2024 तक क्यूमलेटिव कोयला डिस्पैच वित्त वर्ष 2024-25 में 750.75 मीट्रिक टन तक पहुंच गया, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में यह 711.07 मीट्रिक टन था, जो 5.58 प्रतिशत की शानदार वृद्धि दर्शाता है।

रियलमी 14 प्रो सीरीज 5जी में होगा दुनिया का पहला ट्रिपल फ्लैश कैमरा

नई दिल्ली(एजेंसी)। स्मार्टफोन कैमरे हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गए हैं। ये न केवल रोजमर्रा के पलों को कैद करने में मदद करते हैं, बल्कि खूबसूरत नजारों को संजोने का एक अनोखा तरीका भी देते हैं। हमारी जेब में मौजूद कैमरे की हमारे जीवन में भूमिका लगातार बढ़ती जा रही है। स्मार्टफोन कैमरे की गुणवत्ता कुछ मुख्य तत्वों पर निर्भर करती है। इनमें कई चीजें शामिल हैं- जैसे उन्नत सेंसर, जो ज्यादा लाइट और डिटेल्स को पकड़ते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले लेंस, जो तस्वीर को बेहतर बनाते हैं। नए फीचर्स, जो रचनात्मकता को बढ़ाते हैं और इंटेलिजेंट सॉफ्टवेयर, जो तस्वीर को अंतिम रूप से सुधारता है। स्मार्टफोन फोटोग्राफी में बेहतरीन शॉट की खोज लगातार नए आविष्कारों को जन्म देती है। यह हमें बेहतर कहानीकार बनने की ताकत भी देती है। रियलमी 14 प्रो सीरीज फाइव जी इसी फोटोग्राफी के जुनून का उदाहरण है। रियलमी 14 प्रो सीरीज फाइव जी का कैमरा सिस्टम सिर्फ फोटो खींचने के लिए नहीं, बल्कि एक नई तरह की कहानी कहने के लिए है। इस सिस्टम की खासियत है इसका ट्रिपल-रिफ्लेक्शन पेरिस्कोप टेलीफोटो लेंस, जो इस श्रेणी में बहुत कम देखने को मिलता है। यह लेंस लंबी दूरी की जूम के लिए एक अनोखी तकनीक का इस्तेमाल करता है, जिससे दूर की चीजें भी साफ और डिटेल्स के साथ कैप्चर होती हैं। इसके साथ ही, इसमें दुनिया का पहला मैजिक ग्लो ट्रिपल फ्लैश है। यह कोई साधारण फ्लैश नहीं, बल्कि एक पोर्टेबल प्रोफेशनल लाइटिंग सिस्टम है। इसकी ब्राइटनेस और कलर टेम्परेचर को समायोजित किया जा सकता है, जिससे किसी भी परिस्थिति में बेहतरीन लाइट मिलती है। चाहे आप किसी कम लाइट वाली पार्टी की हलचल को कैद कर रहे हों, या शाम के शांत सुंदर नजारे को, यह फ्लैश आपकी तस्वीरों को जीवंत और असली बनाता है। रियलमी 14 प्रो+ फाइव जी का कैमरा सिस्टम इंजीनियरिंग का शानदार नमूना है। इसमें सोनी का 50 मेगापिक्सल ओआईएस सेंसर (आईएमएक्स 896) और ट्रिपल-रिफ्लेक्शन पेरिस्कोप लेंस है, जो 120ङ्ग सुपर जूम तक रेंज देता है। इस तकनीक की मदद से कैमरा का वजन 31त्न और आकार 20त्न तक कम हो गया है। यह अनोखी तकनीक लाइट के मार्ग को फोल्ड करने के लिए मिरर का उपयोग करती है और आप लंबी दूरी से भी अद्भुत तस्वीर खींच सकते हैं। इससे कैमरा न केवल हल्का और पतला हो जाता है, बल्कि बेहतरीन फोटोग्राफी का अनुभव भी देता है।

स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी लिमिटेड का आईपीओ 6 जनवरी 2025 को खुलेगा, प्रति शेयर प्राइस बैंड रू133 से रू140 तय

नई दिल्ली। स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी लिमिटेड, जो रेवन्यू के मामले में वित्तीय वर्ष 2024 में भारत के फार्मास्युटिकल और केमिकल सेक्टर्स के लिए शीर्ष पांच स्पेशलाइज्ड इंजीनियरिंग इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर्स में से एक है, ने अपने पहले इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (आईपीओ) के लिए रू 133/- से रू 140/- प्रति इक्विटी शेयर की प्राइस बैंड तय की है, जिसकी फेस वैल्यू रू10 है। कंपनी का यह आईपीओ सोमवार, 6 जनवरी 2025 को सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा और बुधवार, 8 जनवरी 2025 को बंद होगा। निवेशक कम से कम 107 इक्विटी शेयर और उसके बाद 107 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बिड लगा सकते हैं। यह आईपीओ एक फ्रेश इशू रू210 करोड़ तक का है और जिसमें 1,42,89,367 इक्विटी शेयरों को इशू किया जाएगा। कंपनी द्वारा फ्रेश इशू से प्राप्त रू10 करोड़ का उपयोग मशीनरी और उपकरणों की खरीद के लिए किया जाएगा। रू130 करोड़ का उपयोग कंपनी द्वारा लिए गए कुछ बकाया ऋणों के पुनर्भुगतान के लिए, और इसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एस2 इंजीनियरिंग इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड में निवेश के लिए किया जाएगा, ताकि बैंकों और वित्तीय संस्थानों से एस2 इंजीनियरिंग इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लिए गए कुछ बकाया ऋणों का पुनर्भुगतान किया जा सके। रू30 करोड़ का उपयोग एस2 इंजीनियरिंग इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड की मशीनरी और उपकरणों की खरीद के लिए है। साथ ही रू20 करोड़ का उपयोग स्ट्रेटेजिक इन्वेस्टमेंट और इनऑर्गेनिक ग्रोथ के लिए किया जाएगा और बाकी जनरल कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी की क्षमताओं में डिजाइनिंग, इंजीनियरिंग, निर्माण, असेंबली, इंस्टॉलेशन, और कमीशनिंग समाधान शामिल हैं, साथ ही फार्मास्युटिकल और केमिकल निर्माताओं के लिए टर्नकी बेस पर स्टार्टर्दद ऑपरेटिंग प्रोसीजर स्थापित करना भी शामिल है। इसका पोर्टफोलियो उन मुख्य उपकरणों से बना है जो फार्मास्युटिकल और केमिकल प्रोडक्ट्स के निर्माण में उपयोग किए जाते हैं।

सिडनी टेस्ट में रोहित शर्मा के चयन पर हेड कोच गौतम गंभीर ने दी अपडेट

सिडनी(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर होने वाले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के आखिरी टेस्ट में रोहित शर्मा के खेलने की पुष्टि नहीं की। उन्होंने कहा कि कप्तान रोहित की जगह प्लेइंग इलेवन में होगी या नहीं, यह मैच वाले दिन पिच देखकर तय किया जाएगा। रोहित शर्मा इस सीरीज में खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं। पांच मैचों की सीरीज में भारतीय टीम 1-2 से पिछड़ी हुई है। नियमित कप्तान रोहित पर्थ में हुए मैच में अपने दूसरे बच्चे के जन्म के कारण नहीं खेले थे। जब से वह दूसरे टेस्ट से टीम में वापस आए हैं, तब से उन्होंने सिर्फ 31 रन बनाए हैं और उनकी औसत 6.20 रही है। गंभीर ने मीडिया से कहा, रोहित पूरी तरह ठीक हैं। इसमें कोई परंपरागत बात नहीं है कि वह प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में नहीं आए। हेड कोच का यहां होना पर्याप्त है। हम पिच का निरीक्षण करेंगे और टीम का निर्णय कल करेंगे। जब उनसे फिर पूछा गया कि रोहित, जो नेट प्रैक्टिस में शामिल हुए थे, सिडनी टेस्ट खेलेंगे या नहीं, तो उन्होंने दोबारा कहा, मैंने पहले ही कहा है कि हम पिच देखकर कल टीम की घोषणा करेंगे। जवाब वही है। इसके अलावा, गंभीर ने तेज गेंदबाज आकाश दीप के पीठ की चोट के कारण पांचवें टेस्ट से बाहर होने की पुष्टि की। हालांकि, उन्होंने उनके स्थान पर किसी खिलाड़ी का नाम नहीं बताया।

टीम में कोई मतभेद नहीं, वह अपना काम जानते हैं, गंभीर के बचपन के कोच

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के बचपन के कोच संजय भारद्वाज ने कहा है कि भारतीय खेमे में कोई मतभेद नहीं है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के बॉक्सिंग डे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 184 रन से हार के बाद ड्रेसिंग रूम में अशांति की अटकलों के बीच, गंभीर ने स्पष्ट किया कि ये सिर्फ रिपोर्ट हैं, सच्चाई नहीं। गंभीर के कोच भारद्वाज ने भी यही भावना दोहराई और कहा कि जब टीम हारती है तो ऐसी रिपोर्ट आना आम बात है। गंभीर के बचपन के कोच भारद्वाज ने गुरुवार को से कहा, जब भी कोई टीम हारती है, तो ऐसी खबरें सामने आती हैं। गंभीर को पता है कि उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है और मैच जीतने के लिए टीम से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करवाना है। उन्हें पता है कि टीम में क्या संभावनाएं हैं और उन्हें पता है कि अनुभवी और नए खिलाड़ियों का उपयोग कैसे करना है। मुझे नहीं लगता कि टीम में कोई दरार है। जहां तक मुझे पता है, रोहित व्यक्तिगत रूप से अपने फॉर्म से संतुष्ट नहीं हैं। सिडनी में सीरीज के पांचवें और अंतिम टेस्ट से पहले प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में गंभीर अपने शब्दों पर अड़े रहे और टीम के संघर्ष के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर बात की। उन्होंने कहा, जब तक ड्रेसिंग रूम में ईमानदार लोग रहेंगे, भारतीय क्रिकेट सुरक्षित हाथों में रहेगा। केवल प्रदर्शन ही आपको ड्रेसिंग रूम में रखता है। ईमानदारी से बात की गई और ईमानदारी महत्वपूर्ण है। गंभीर ने इस बात की पुष्टि करने से इनकार कर दिया कि कप्तान रोहित शर्मा प्लेइंग इलेवन का हिस्सा होंगे या नहीं। उनसे पारंपरिक प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में कप्तान की अनुपस्थिति के बारे में पूछा गया और क्या यह अंतिम टीम में उनके शामिल होने का संकेत है। गंभीर ने कहा, रोहित के साथ सब कुछ ठीक है। हेड कोच यहां हैं और यही काफी है।

टेक्नोलॉजी को प्राथमिकता देने का समय, टैलेंट से ही निर्धारित होगी भविष्य की सफलता : गौतम अदाणी

अहमदाबाद(एजेंसी)। अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी ने बुधवार को कहा कि हमारी असली चुनौती अपनी पूंजी को प्रभावी ढंग से तैनात करने की है और हमें उन दो टी को प्राथमिकता देनी चाहिए जो आज की दुनिया में सबसे बड़े डिफ्रेंशिएटर को तौर पर काम रहे हैं, वो हैं टेक्नोलॉजी और टैलेंट। कंपनी के कर्मचारियों को अपने नववर्ष संदेश में गौतम अदाणी ने कहा कि हमारा ध्यान अपने लोगों की असीम क्षमता को अनलॉक करने पर है। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन ने कहा, सबसे पहले मैं टेक्नोलॉजी के बारे में बात करूंगा। आज के तेजी से विकसित हो रहे परिदृश्य में हर कंपनी को एक टेक्नोलॉजी कंपनी के रूप में सोचना और कार्य करना चाहिए या महत्वहीन होने का जोखिम उठाना चाहिए। प्रभावी ढंग से स्केलिंग के लिए केवल सॉफ्टवेयर टूल लागू करने से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है। इसके लिए हमारे संगठन के मूल ढांचे में टेक्नोलॉजी फर्स्ट की मानसिकता को शामिल करना आवश्यक है। गौतम अदाणी ने आगे कहा, यह वैकल्पिक नहीं है, बल्कि आवश्यक है और इसकी शुरुआत हमारे शीर्ष 100 लीडर्स द्वारा माहौल तय करने से होती है। हममें से हर एक को टेक्नोलॉजी रूप से कुशल होने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए और यह किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए नहीं, बल्कि सोचने के तरीके के रूप में भी है। आवश्यक होने की दौड़ में तकनीक ही रेसट्रैक है और नेतृत्व वह कदम है, जो सुनिश्चित करता है कि हम पहले स्थान पर रहें। शीर्ष उद्योगपति ने इस बात पर जोर दिया कि परिवर्तन का समय हमारा इंतजार नहीं करते, बल्कि वे मांग करते हैं कि हम दूरदृष्टि, साहस और कार्य करने की इच्छाशक्ति के साथ उनका सामना करें। गौतम अदाणी ने कहा, एआई-संचालित दुनिया में भविष्य इस बारे में है कि हम कैसे काम करते हैं और अपने लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करते हैं। मैं आप सभी को चुनौती देता हूं कि आप इनोवेशन करने और उत्कृष्टता के नए स्टैंडर्ड स्थापित करने के लिए टेक्नोलॉजी को एक लीवर के रूप में अपनाएं। आपका करियर विकास और हमारी सामूहिक सफलता इस पर निर्भर करती है। टैलेंट के बारे में गौतम अदाणी ने कहा कि यह हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है और यह हमारी दीर्घकालिक सफलता का निर्धारण करेगी। टैलेंट केवल रिज्यूमे या क्रेडेंशियल्स नहीं है, बल्कि यह एडेप्ट, इनोवेशन और लीडरशीप है। इस वर्ष, हम इन-हाउस टैलेंट को पोषित करके सबसे पहले क्षमता का एक पावरहाउस बनाने की अपनी प्रतिबद्धता को दोगुना कर रहे हैं। अदाणी समूह के चेयरमैन ने कहा, हमारा लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति की पूरी क्षमता को अनलॉक करना है।

मर्क्यूरी ईवी टेक लिमिटेड ने डीसी 2 मर्क्यूरी कार्स प्राइवेट लिमिटेड में 69 .84त्न हिस्सेदारी खरीदेगी

मर्क्यूरी ईवी टेक लिमिटेड (बीएसई: 531357), जो इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन में एक प्रमुख कंपनी है, ने डीसी2 मर्क्यूरी कार्स प्राइवेट लिमिटेड और अनुराधा बी. छाबड़िया (विक्रेता) के साथ शेयर खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी 25,00,000 इक्विटी शेयरों में से 69.84% हिस्सेदारी का अधिग्रहण करेगी। इस अधिग्रहण के बाद, लक्षित कंपनी को अधिग्रहक की सहायक कंपनी माना जाएगा।

डीसी2 मर्क्यूरी कार्स मुख्य रूप से यात्री कारों, स्पोर्ट्स कारों और कारों के संशोधन का डिज़ाइन करती है। कंपनी के मुख्य डिज़ाइनर श्री दिलीप छाबड़िया (डीसी) के होने के कारण, उनकी कारों के डिज़ाइन में विशेषज्ञता मर्क्यूरी ईवी-टेक लिमिटेड के लिए उनके असाधारण कौशल का एक सजीव उदाहरण बनेगी। डीसी मर्क्यूरी कार्स के ब्रांड के तहत यह सहयोग उत्पादों की बाजार में स्वीकृति बढ़ाने और आगामी वर्षों में व्यापार वृद्धि को प्रेरित करने की उम्मीद है। यह रणनीतिक अधिग्रहण मर्क्यूरी ईवी-टेक के उत्पाद पोर्टफोलियो में एक और पहलू जोड़ देगा।

डीसी मुख्य रूप से मौजूदा कारों का डिज़ाइन कर रहा है और उनकी विभिन्न स्पोर्ट्स और एसयूवी कार डिज़ाइन भी हैं, जिन्हें मुख्य डिज़ाइनर श्री दिलीप छाबड़िया (डीसी) द्वारा डिज़ाइन किया गया है। 1993 में स्थापित डीसी डिज़ाइन भारत में विशेष कार अनुकूलन के लिए एक प्रमुख स्टूडियो बन गया। डीसी लक्ज़री सेडान, स्पोर्ट्स कार, और यहां तक कि व्यावसायिक वाहनों को अनोखे master-श्चद्बद्गष्द्गह्य में बदलने के लिए प्रसिद्ध हैं।

कार्यालय, कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, संभाग दुर्ग (छ.ग.)

संक्षिप्त मैन्युअल निविदा सूचना कमांक-21

ज्ञा.कं. 10 / व.ले.लि./ग्रा.यां.से./2024-25 दुर्ग, दिनांक 2 /01/2025

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)
1	शासकीय चन्द्रशेखर आजाद उ.मा.विद्यालय पंचशील नगर दुर्ग में मरम्मत कार्य	12.58
2	शास. पूर्व माध्य. शाला कातुलबोर्ड दुर्ग अतिरिक्त कक्ष निर्माण कार्य	14.81
3	संजय नगर सुपेला परमेश्वरी विद्यालय के पास अतिरिक्त कक्ष का निर्माण	8.93
4	वैशाली नगर विधानसभा अंतर्गत नगर निगम भिलाई में 20 स्थानों पर बोर खनन एवं पम्प लगाने कार्य	19.70

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि विस्तृत निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी http://res.cg.gov.in में अथवा कार्यालयीन अवधि में दिनांक 02/01/2025 से देखी जा सकती है एवं ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 16/01/2025 है।

कार्यपालन अभियंता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग दुर्ग

जी-242505063/2

कार्यालय कार्यपालन अभियंता,
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग कोण्डागांव जिला-कोण्डागांव (छत्तीसगढ़)
Email - ID : ee-res.kondagaon@nic.in, Fax & Ph. No.-07786-242243

मैनुअल पद्धति से जोनल निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक - 30 (द्वितीय दौर)

कमांक/ 30 /व.ले.लि./नि.प्र./ग्रा.यां.सेवा/2024-25 कोण्डागांव, दिनांक 01/01/2025

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत 'डी' एवं उच्च श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु मैनुअल जोनल निविदा आमंत्रित की जाती है सभी कार्यों की जोनल निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा करने की **अंतिम तिथि 10.01.2025 शाम 3.00 बजे** तक।

क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रूपये लाख में)
1	2	3
1	रू. 25.00 लाख से कम लागत के विभिन्न निर्माण भवन/मंच/पुलिया/बाउंड्रीवाल/नाली/सड़क एवं अन्य प्रकार के निर्माण कार्य - वि.ख. केशकाल वि.ख. बड़ेराजपुर	 50.00 50.00

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाइट http://res.cg.gov.in दिनांक 02.01.2025 से देखी एवं डाऊनलोड की जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता,
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा
संभाग-कोण्डागांव

G-242505021/1

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, शनिवार 04 जनवरी 2025

महाकुंभ मेले पर दुर्ग-नौतनवा एक्सप्रेस का प्रयाग स्टेशन में अस्थायी ठहराव की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे प्रशासन द्वारा महाकुंभ मेला 2025 के अवसर पर श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से चलने वाली गाड़ी संख्या 18205 दुर्ग-नौतनवा एक्सप्रेस का 02 मिनट का अस्थायी ठहराव उत्तर मध्य रेलवे के प्रयाग स्टेशन में दिया जा रहा है। दिनांक 10 जनवरी से 28 फरवरी 2025 तक दुर्ग से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 18205 दुर्ग-नौतनवा एक्सप्रेस प्रयाग स्टेशन में 11:18 बजे पहुंचेगी तथा 11:20 बजे रवाना होगी।

संक्षिप्त समाचार

सांसद बृजमोहन अग्रवाल के प्रयास से कुम्हारी टोल नाका बंद, केन्द्रीय मंत्री गडकरी का आभार प्रकट किया

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के विकास पुरुष, रायपुर लोकसभा के लोकप्रिय सांसद बृजमोहन अग्रवाल जी के द्वारा जनता के असुविधाओं को समझते हुए दुर्ग कुम्हारी टोल टैक्स को फ्री करते हुए नाका को बंद करने के लिए मोदी सरकार के केन्द्र शासन से निवेदन किया गया था जिस पर मोदी सरकार के केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी जी ने तत्काल प्रभाव से कार्यवाही करते हुए आदेश पारित कर रायपुर दुर्ग कुम्हारी नाका को बंद करवाया गया है जिसके लिए मोर भाजपा मोदी कुटुम्ब परिवार जनों ने एवं छत्तीसगढ़ वासियों ने लोकप्रिय सांसद बृजमोहन अग्रवाल जी के प्रति आभार प्रकट करते हुए मोदी सरकार के केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी जी को साधुवाद दिया है! अब से आम नागरिकों को कुम्हारी नाका टोल टैक्स फ्री कर दिया गया है और नाका को बन्द रखा जा रहा है।

समपार फाटक सं.-387 दावनबोड में रोड अंडर ब्रिज (आर यू बी) का निर्माण का कार्य में बॉक्स पुशिंग का कार्य पूर्ण

एप्रोच रोड और रिटेनिंग वॉल के निर्माण कार्य के लिए दावनबोड समपार फाटक को स्थायी रूप बंद रहेगा

रायपुर (विश्व परिवार)। समपार फाटक सं.-387 दावनबोड में रोड अंडर ब्रिज (आरयूबी) निर्माण का कार्य प्रगति पर है, जहाँ बॉक्स पुशिंग का कार्य पूर्ण कर लिया गया है, अब एप्रोच रोड और रिटेनिंग वॉल का निर्माण कार्य किया जा रहा है। इसलिए इस निर्माण कार्य के लिए उक्त समपार फाटक को स्थायी रूप से बंद करना अति आवश्यक है। उक्त फाटक को स्थायी रूप से बंद करने के लिए अनुविभागीय दण्डाधिकारी / सिमगा के द्वारा अनुमति प्रदान की गई है। समपार फाटक सं.-387 दावनबोड का निर्माण कार्य पूर्ण करने के लिए दिनांक-31.12.2024 से निर्माण कार्य पूर्ण होने तक (संभावित तिथि 31.03.2025) बंद किया जाएगा। आमजन की सुविधा हेतु आवागमन के लिए इस मार्ग के स्थान पर परिवर्तित मार्ग (दावनबोड से कुकराचुन्दा तथा दावनबोड से पेंड्री होकर) का उपयोग किया जा सकता है। उक्त समपार फाटक का निर्माण कार्य दिनांक-31.03.2025 तक पूर्ण होने की संभावना है, निर्माण कार्य पूर्ण होने के उपरांत आवागमन शुरू किया जाएगा।

किसानों के लिए उपयोगी है कृषि दर्शिका : कृषि मंत्री नेताम

कृषि मंत्री ने कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कृषि दर्शिका 2025 का किया विमोचन

रायपुर (विश्व परिवार)। कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने आज यहां नया रायपुर स्थित उनके निवास कार्यालय में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कृषि दर्शिका 2025 का विमोचन किया। श्री नेताम ने कृषि दर्शिका के प्रकाशन हेतु इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल एवं उनके सहयोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। कृषि मंत्री ने कहा कि कृषि दर्शिका में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों के साथ ही नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकी तथा किसानों के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारियों को शामिल किया गया है, जो किसानों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कृषि विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ के किसानों के हित में इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहेगा।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल ने कृषि मंत्री को विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कृषि दर्शिका 2025 के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कृषि दर्शिका में छत्तीसगढ़ राज्य की सामान्य जानकारी, कृषि क्षेत्रफल, प्रमुख कृषि फसलों, उनकी उत्पादन तकनीक, कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों, योजनाओं, गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी रहती है। दर्शिका में विभिन्न खरीफ एवं रबी फसलों जिनमें अनाज, दलहन, तिलहन, लघु धान्य फसलें, चारा फसलें, औषधीय एवं सगंध फसलें तथा फल, फूल एवं सब्जी वाली फसलों की उन्नत कृषि कार्यमाला प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही कृषि विश्वविद्यालय की विगत वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों, विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों तथा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित एवं प्रसारित कृषक उपयोगी प्रौद्योगिकी की जानकारी भी प्रकाशित की जाती है। विभिन्न फसलों के प्रमुख कीट एवं प्रमुख रोग तथा उनका प्रबंधन भी शामिल किया जाता है। इसके साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों के लिए संचालित विकास एवं कल्याण योजनाओं, उनके तहत दी जाने वाली सुविधाओं एवं अनुदान के संबंध में जानकारी दी जाती है। कृषि दर्शिका में कृषि विश्वविद्यालय, कृषि तथा संबंधित विभागों एवं किसानों के लिए उपयोगी अन्य संपर्क सूत्रों की जानकारी भी प्रकाशित की जाती है। विमोचन समारोह में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के निदेश विस्तार सेवाएं डॉ. एस.एस. टुटेजा, डॉ. नीता खरे, डॉ. ज्योति भट्ट, डॉ. दीप्ति झा एवं संजय नैयर उपस्थित थे।

रामकृष्ण केयर अस्पताल में डॉ. सिंघल ने 'मिनीमम कट तकनीक' द्वारा मरीज के चारों जोड़ एवं शोल्डर रिप्लेसमेन्ट किये

रायपुर (विश्व परिवार)। अभी हाल ही में शहर के जाने-माने रामकृष्ण केयर अस्पताल के जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. अंकुर सिंघल ने 'मिनीमम कट तकनीक' (MCT) द्वारा एक मरीज का शोल्डर का रिप्लेसमेन्ट परफॉर्म किया।

इस सर्जरी की खास बात यह थी मरीज को गठियावात नामक बीमारी थी उसके दोनों घुटने एवं कुल्हे खराब हो गये थे शरीर की सभी हड्डियां कमजोर हो गई थी, कमजोर हड्डियों की वजह से कंधे में ऑर्थराइटिस एवं फ्रेक्चर हो गया था। जिसकी वजह से वह लगभग एक वर्ष से चल नहीं पा रहा था एवं करवट भी नहीं ले पा रहा था। डॉ. सिंघल ने न सिर्फ उनके घुटनें एवं कुल्हे का प्रत्यारोपण किया कंधे का भी रिवर्स शोल्डर प्रत्यारोपण किया। आज मरीज पूरी तरह से स्वस्थ्य है रोजाना 4-5 किमी. चल रहा है और सामान्य जीवन यापन कर रहा है तथा उनका शोल्डर पूरी तरह ठीक हो गया है।

डॉ. अंकुर सिंघल ने बताया कि उनके द्वारा ईजाद की हुई इस मिनिमम कट तकनीक (MCT) से जोड़ प्रत्यारोपण के बाद मरीजों की रिकवरी शीघ्र होती है और जटिल से जटिल सर्जरी आसानी से की जा सकती है। इस तकनीक से मरीज न सिर्फ केवल कुछ घंटें बाद चल सकता है बल्कि अपने सामान्य जीवन के क्रियाकलापों में तेजी से वापस लौट सकता है।

संत ज्ञानेश्वर स्कूल की दिव्यांशी साहू सावित्रीबाई फुले बनकर स्कूल पहुंची तो सभी बच्चों का ध्यान उन पर आकर टिक गया

संत ज्ञानेश्वर स्कूल में मनाई गई सावित्रीबाई फुले जयंती

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल के संत ज्ञानेश्वर विद्यालय में देश की पहली महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले की जयंती शुक्रवार, तीन जनवरी को मनाई गई। सावित्री बाई फुले की वेशभूषा में पहुंचीं कक्षा दूसरी की छात्रा दिव्यांशी साहू ने बच्चों को प्रेरक उद्बोधन दिया। सुबह की प्रार्थना सभा में इस उत्सव का आयोजन शिक्षिका अस्मिता कुसरे के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य मनीष गोवर्धन ने भी बच्चों का मार्गदर्शन किया।

प्राचार्य गोवर्धन ने बच्चों को बताया कि सावित्रीबाई भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्राचार्य और पहले किसान स्कूल की संस्थापक थीं। उन्होंने अपना जीवन एक मिशन की तरह से जीया, जिसका उद्देश्य था विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना। वे स्कूल जाती थीं, तो विरोधी उन पर पत्थर फेंकते थे। उन पर गंदगी फेंक देते थे। आज से 191 साल पहले बालिकाओं के लिए जब स्कूल खोलना पाप का काम माना जाता था, तब ऐसा होता था।

प्राचार्य ने बताया कि पांच सितंबर 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर सावित्रीबाई ने विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ महिलाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। एक वर्ष में वे महात्मा फुले पांच नए विद्यालय खोलने में सफल हुए। तत्कालीन सरकार ने इन्हें सम्मानित भी किया। एक महिला प्रिंसिपल के लिए सन् 1848 में बालिका विद्यालय चलाना कितना मुश्किल रहा होगा, इसकी कल्पना शायद आज भी नहीं की जा सकती। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। सावित्रीबाई फुले उस दौर में न सिर्फ खुद पढ़ीं, बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने की भी व्यवस्था की। 10 मार्च 1897 को प्लेग की बीमारी से सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया।

यशोदा हॉस्पिटल की एक और चिकित्सा उपलब्धि, ECMO तकनीक से बचाई गंभीर मरीज की जान

रायपुर (विश्व परिवार)। यशोदा हॉस्पिटल, हैदराबाद सोमाजीगुड़ा द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उन्नत चिकित्सा तकनीकों और जीवनरक्षक उपायों पर प्रकाश डाला जाएगा।

इस अवसर पर गंभीर न्यूमोनिया से जूझ रहे एक मरीज की प्रेरक कहानी प्रस्तुत की जाएगी। मरीज की स्थिति अत्यधिक गंभीर थी, लेकिन उसे श्वष्टस्न्न (एक्स्ट्राकॉर्पोरियल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन) तकनीक की मदद से सफलतापूर्वक बचा लिया गया। यह घटना चिकित्सा जगत में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि को दर्शाती है और उन्नत उपचार पद्धतियों के महत्व को रेखांकित करती है।

इस प्रेस कॉन्फ्रेंस का विषय ECMO और फेफड़ों का प्रत्यारोपण होगा। कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. विश्वेशरन बालासुब्रमण्यम, जो एक प्रतिष्ठित इंटरवेंशनल पल्मोनोलॉजिस्ट और फेफड़ों के प्रत्यारोपण विशेषज्ञ हैं, उपस्थित रहेंगे। डॉ. बालासुब्रमण्यम उन्नत फेफड़ों के उपचार, ECMO तकनीक की भूमिका, और जीवनरक्षक उपायों के बारे में अपने गहन विचार साझा करेंगे।

यह प्रेस कॉन्फ्रेंस भिलाई में होटल ग्रैंड ढिल्लन, ए1 नेहरू नगर स्क्वायर, जीई रोड पर आयोजित की जाएगी। कार्यक्रम का समय शाम 4 बजे निर्धारित है।

मीडिया के सभी सम्मानित सदस्यों को इस विशेष आयोजन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह सम्मेलन न केवल चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों की जानकारी प्रदान करेगा बल्कि एक मरीज के सफल उपचार की प्रेरक कहानी को भी उजागर करेगा। आपकी गरिमामयी उपस्थिति से यह आयोजन और भी सफल होगा।

SFSL रायपुर और आंजनेय विश्वविद्यालय के बीच महत्वपूर्ण समझौता

युवा पीढ़ी को उन्नत शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान करेगा यह समझौता : कुलपति

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई संभावनाओं की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम : निदेशक, SFSL

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (स्न्नस्रु), रायपुर, छत्तीसगढ़ पुलिस विभाग (गृह) और आंजनेय विश्वविद्यालय, रायपुर ने आज एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (रू्श) पर हस्ताक्षर किए। यह कार्यक्रम स्न्नस्रु रायपुर में संपन्न हुआ। इस समझौते का उद्देश्य स्न्नस्रु रायपुर और आंजनेय विश्वविद्यालय के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र, विशेष रूप से फोरेंसिक विज्ञान और साइबर सुरक्षा में ज्ञान आदान-प्रदान, अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देना है। यह सहयोग दोनों संस्थानों की क्षमताओं को सुदृढ़ करेगा और क्षेत्र में फोरेंसिक तकनीक के विकास में योगदान देगा। डॉ. राजेश मिश्रा, निदेशक, स्न्नस्रु रायपुर, ने इसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई संभावनाओं की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। डॉ. टी.एल. चंद्रा, संयुक्त निदेशक, स्न्नस्रु रायपुर, ने इस अवसर पर कहा कि यह समझौता फोरेंसिक विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करेगा। इस अवसर पर माननीय कुलपति, डॉ. टी. रामाराव ने कहा कि यह रू्श हमारी युवा पीढ़ी को उन्नत शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान करेगा। साथ ही, यह साझेदारी क्षेत्र में फोरेंसिक तकनीक और साइबर सुरक्षा में नवाचारों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भविष्य की बड़ी उपलब्धियों का आधार बनेगा।

उम्मीद और भविष्य की दिशा : डॉ. शिल्पा शर्मा, डीन (विज्ञान) ने कहा कि यह समझौता न केवल दो संस्थानों के बीच सहयोग का प्रतीक है, बल्कि यह क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह फोरेंसिक और साइबर सुरक्षा में नवाचारों को बढ़ावा देगा, जिससे अपराध जांच और निवारण में नई तकनीकों का समावेश होगा।

इस अवसर पर डॉ. राजेश मिश्रा, निदेशक, स्न्नस्रु रायपुर, डॉ. टी.एल. चंद्रा, संयुक्त निदेशक, स्न्नस्रु रायपुर, डॉ. टी. रामाराव, कुलपति, अंजनेया विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. बी.सी. जैन, महानिदेशक, अंजनेया विश्वविद्यालय, रायपुर, श्री सुमित श्रीवास्तव, प्रो-वाइस चांसलर, अंजनेया विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. शिल्पा शर्मा, डीन (विज्ञान), डॉ. राजेश कुमार, डीन (अकादमिक), डॉ. हरीश शर्मा, डीन (फार्मेसी) मौजूद रहे।

तनाव प्रबंधन एवं मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला 7 को

रायपुर प्रेस क्लब और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, रायपुर का संयुक्त आयोजन

बेंगलुरू से आए विशेषज्ञ देंगे मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन की जानकारी, रजिस्ट्रेशन 4 जनवरी तक

रायपुर (विश्व परिवार)। भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है। शारीरिक स्वास्थ्य का तो हम ध्यान रख लेते हैं, लेकिन मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बहुत कम जागरूक हैं। छोटी-छोटी बातों में चिड़चिड़ापन, गुस्सा, उदासी लोगों पर हावी हो रही है। काम का तनाव और दबाव झेलने की क्षमता लोगों में कम हो रही है।

इसी को ध्यान में रखते हुए रायपुर प्रेस क्लब और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, रायपुर की ओर से तनाव प्रबंधन एवं मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रेस क्लब, मोतीबाग में 7 जनवरी 2025 को किया जा रहा है। इस बेहद महत्वपूर्ण कार्यशाला में भाग लेने के लिए इच्छुक सदस्य 4 जनवरी 2025 तक प्रेस क्लब कार्यालय में अपना नाम दर्ज करा सकते हैं। कार्यशाला में बेहतर जीवन शैली, स्वास्थ्य जागरूकता और तनाव को कैसे से हैंडल करना है, इसका प्रशिक्षण बेंगलुरू से आए विशेषज्ञों द्वारा दिया जाएगा।

प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर, महासचिव डॉ. वैभव शिव पांडेय, उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष रमन हलवाई और संयुक्त सचिव तृप्ति सोनी, अरविंद सोनवानी ने इच्छुक सदस्यों से इस महत्वपूर्ण और जरूरी कार्यशाला में भाग लेने की अपील की है।

भारतीय संस्कृति का प्रतीक है स्वदेशी मेला : रमन सिंह

समापन समारोह में विजेताओं को मिले पुरस्कार

रायपुर (विश्व परिवार)। शहर के साइंस कॉलेज मैदान में विगत आठ दिनों से चल रहे स्वदेशी मेला का समापन शुक्रवार को हो गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के विधान सभा अध्यक्ष डॉक्टर रमन सिंह थे। इस मौक़े पर उन्होंने कहा कि पिछले 24 वर्षों से स्थानीय स्तर पर तैयार होने वाले विभिन्न समानों को लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य स्वदेशी मेला करता आ रहा है। जिस तरह से बच्चों से लेकर युवाओं, महिलाओं की कला को निखारने के लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित करके उन्हें सम्मानित, प्रोत्साहित किया जाता है वह प्रशंसनीय है। निश्चित ही इससे समाज का, रीतिरिवाजों का संरक्षण और संवर्धन हुआ है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि सांसद ब्रजमोहन अग्रवाल ने कहा कि मैंने विगत कई वर्षों से मेले के माध्यम से जनमानस के प्रति यहाँ की आयोजन समिति के समर्पण भाव को देखा है जो काबिले तारीफ़ है। इस अवसर पर विधायक राजेश मूणत, डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना, राम प्रताप, श्रीकांत पवार सहित कई अतिथि उपस्थित थे।

स्वदेशी मेला के दौरान हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मंचस्थ अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। दोपहर में हुई बेस्ट आउट ऑफ़ वेस्ट प्रतियोगिता हुई। जिसके दोनों ग्रुप में कुल प्रतिभागी थे। घर के अनुपयोगी समानों का उपयोग करके खूबसूरत, आकर्षक कलाकृतियाँ और सजावटी सामान बनाये गए। जिसमे कार्डबोर्ड की लेयर्स से केदारनाथ धाम मंदिर, वॉल हैंगिंग, चंद्रयान, पेड़ की डाली से आकृति, गार्डन, नारियल से घर, बैलगाड़ी, लहसुन के छिलके से फ्लावर, आदि सामान शामिल थे। इसके निर्णायक दल में नम्रता अग्रवाल, मधु अरोरा, आभा मिश्रा, अरुणिता घोष शामिल थीं इसमें प्रथम ग्रुप में प्रथम विराट छुरा, द्वितीय प्रिया सिंहा और तृतीय अंशिका कुशवाहा तथा ग्रुप बी में प्रथम कल्पना साहू, द्वितीय अनिकेत ढिल्लू एवं तृतीय ऋतु वर्मा, सांत्वना अदिति कुशवाहा को प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता की प्रभारी भारती बागल, अन्नपूर्णा शर्मा, तूलिका पांडे, ए पी झा, सविता मौर्य थीं। कल हुए वॉइस ऑफ़ रायपुर के कार्यक्रम में ग्रुप ए में प्रथम प्रिंस वानखेड़े, द्वितीय बी हारिका, तृतीय मानसी यादव व सांत्वना निशांत झाड़ी तथा दूसरे ग्रुप बी में प्रथम आँचल वर्मा, द्वितीय आयुष नामदेव, तृतीय लक्षिका यादव व सांत्वना पुरस्कार रिंकी मोगरी को मिला। रोजाना होने वाली व्याख्यानमाला की कड़ी में आखिरी दिन आम नागरिक के कर्तव्य विषय पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा जानकारी दी गई। इसमें बतौर मुख्य अतिथि अमर पारवानी प्रदेश अध्यक्ष छत्तीसगढ़ चैम्बर आफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ शामिल हुए।

इस दौरान प्रबंधक सुब्रत चाकी, मेला संयोजक प्रवीण मैशेरी, सह संयोजक द्वय अमरजीत सिंह छबड़ा व मनीषा सिंह, महिला कार्य सह प्रमुख इला गुप्ता, दिग्विजय भाकरे, प्रवीण जी आर जगत, शीला शर्मा, शताब्दी पांडे, इंदिरा जैन, सुनीता चंसोरिया, तृप्ति चौहान, मंजुला जैन, असहित कार्यकर्ता विशेष रूप से मौजूद रहे।

चोरी की 39.880 एमटीएमएस बिलेट से भरे ट्रक वाहन को लावारिस हालत में किया गया बरामद

- थाना गुढ़ियारी क्षेत्रान्तर्गत रिंग रोड नंबर स्थित झाबक पेट्रोल पंप पास अज्ञात आरोपी ट्रक एवं उसमें लोड एम एस बिलेट को किया था चोरी
- ट्रक एवं उसमें लोड एम एस बिलेट को थाना उरला क्षेत्रांतर्गत सतीश ट्रक पार्किंग से लावारिस हालत में किया गया बरामद
- जप्त मशरूका की कुल कीमत है लगभग 33, 83, 658/- रूपये

रायपुर (विश्व परिवार)। विवरण - प्रार्थी मोह. ईरशाद खान ने थाना गुढ़ियारी में रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह ट्रक चालक है तथा वर्तमान में 12 चक्का ट्रक क्रमांक सी जी/04/एल के/8526 का चालक है। उक्त ट्रक रेशमा खान के नाम से पंजीकृत है तथा श्री कृष्णा ट्रांस्पोर्ट कंपनी रावांभाठा रायपुर में चलता है। प्रार्थी दिनांक 30.12.2024 को गणपति ईस्पात उरला से एम एस बिलेट वजन 39.880 एम टी को लोड कराकर मेसर्स नारायण इस्पात तेंदुआ रोड हीरापुर के लिए रात्रि 09:10 बजे लगभग रवाना हुआ था। रात्रि 10:35 बजे झाबक पेट्रोल पम्प के पास रोड किनारे लोड किये हुये ट्रक को खडी कर प्रार्थी अपने घर गाजी नगर बीरगांव चला गया था। प्रार्थी सुबह करीब 08:45 बजे झाबक पेट्रोल पम्प के पास पहुंचा तो देखा उक्त ट्रक को जहां खडी किया था, बिलेट माल सहित ट्रक नहीं था, आसपास पता तलाश करने पर कहीं पता नहीं चला। कोई अज्ञात चोर 12 चक्का ट्रक क्रमांक सी जी/04/एल के/8526 एवं उसमें लोड एम एस बिलेट वजन 39.880 एम टी को चोरी कर ले गया, कि प्रार्थी की रिपोर्ट पर अज्ञात आरोपी के विरूद्ध थाना गुढ़ियारी में अपराध क्रमांक 02/25 धारा 303(2) बी.एन.एस. का अपराध पंजीबद्ध किया गया।

चोरी की उक्त घटना को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा गंभीरता से लेते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर श्री लखन पटले, नगर पुलिस अधीक्षक उरला श्री अमन कुमार झा (भा.पु.से.) एवं थाना प्रभारी गुढ़ियारी को अज्ञात आरोपी की पतासाजी कर जल्द से जल्द गिरफ्तार करने एवं मशरूका बरामद करने हेतु निर्देशित किया गया। जिस पर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन व थाना प्रभारी गुढ़ियारी के नेतृत्व में थाना गुढ़ियारी पुलिस की टीम द्वारा घटना के संबंध में प्रार्थी सहित आसपास के लोगों से विस्तृत पूछताछ कर अज्ञात आरोपी की पतासाजी करना प्रारंभ किया गया। टीम के सदस्यों द्वारा घटना स्थल व उसके आस-पास लगे सी.सी.टी.व्ही. कैमरों के फुटेजों का अवलोकन करने के साथ ही अज्ञात आरोपी व मशरूका की पतासाजी हेतु मुखबीर लगाये गये। तकनीकी विश्लेषण व अन्य माध्यमों से भी अज्ञात आरोपी व मशरूका की पतासाजी की जा रहीं थी। पतासाजी के दौरान टीम के सदस्यों द्वारा थाना उरला क्षेत्रांतर्गत सतीश ट्रक पार्किंग से चोरी हुये ट्रक क्रमांक सी जी/04/एल के/8526 एवं उसमें लोड एम एस बिलेट वजन 39.880 एम टी कीमती लगभग 33, 83, 658/- रूपये को बरामद कर जप्त किया गया है।

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता
ONLYTDS.COM
ITR GST
G.S.T. रिटर्न | Food Licence
इन्कम TAX फाईल | M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड | प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस | डिजिटल सिग्नेचर
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354